



खत्म हुआ-  
उत्तरप्रदेश में माफिया का कहर

..... इंडियाज़ फास्टेस्ट ग्रोइंग न्यूज़ पेपर.....

वैक्सीन का आश्वासन...  
सुनते सुनते थक चुका है देश



# सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17

अंक-7

मासिक

1 अक्टूबर 2020

पृष्ठ-12

मूल्य- पाँच रुपये

## कृषि विधेयक

भ्रम फैलाने वाले नेता और  
राजनीतिक दल किसान विरोधी हैं



बाबरी विध्वंस मामले में सभी आरोपी बरी, सीबीआई कोर्ट ने  
कहा- पूर्व नियोजित नहीं थी घटना p12

खेती विहीन हो जाएगा अन्नदाता

साक्षात्कार-किसान नेता वीएम सिंह p5

अन्दर के पृष्ठ पर.....

नए पंख,

आकाश को छूने के लिए-

P-2

कोरोना, लॉकडाउन,

वैक्सीन का आश्वासन

P-6

भारत में कोहराम मचा सकता है

दूसरा चीनी वायरस

P-12

उड़ रहा है मजाक

पाकिस्तान की एक्ट्रेस सबा कमर P-11





## सम्पादक की कलम से

किसी समय अनिल अंबानी का नाम भारत के शीर्ष उद्योगपतियों में लिया जाता था और अब हालत यह है कि उन्हें अपने वकीलों की फीस भरने के लिए अपनी पत्नी के गहनें तक बेचने पड़ रहे हैं। अनिल अंबानी ने खुद ब्रिटेन की एक अदालत में कहा है कि उनके पास वकील की फीस भरने के लिए पैसे नहीं हैं। वह अपनी पत्नी के कीमती गहनें बेचकर फीस का भुगतान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि परिवार और पत्नी उनका खर्च उठा रहे हैं। कर्ज से जूझ रहे अनिल अंबानी ने ब्रिटेन की अदालत से कहा कि वह एक बेहद साधारण जीवन जी रहे हैं, केवल एक कार चलाते हैं। उन्होंने कहा कि जनवरी से जून 2020 के बीच अपने सभी गहनों से 9.9 करोड़ रुपए प्राप्त हुए हैं और अब उनके पास कोई भी कीमती वस्तु नहीं बची है।

अनिल अंबानी से जब उनके लग्जरी कारों के बेड़े के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि यह सब मीडिया द्वारा फैलाई अफवाहें हैं और उनके पास कभी कोई रोल्स रॉयल कार नहीं थी। उन्होंने बताया कि वह वर्तमान में सिर्फ एक कार चला रहे हैं। ब्रिटेन की अदालत ने 22 मई 2020 को अनिल अंबानी को आदेश दिया था कि वह तीन चीनी बैंकों का 12 जून 2020 तक 71,69,17,681 डॉलर (करीब 5,281 करोड़ रुपए) का कर्ज चुकाएं और बतौर कानूनी खर्च 50,000 पाउंड (करीब 7 करोड़ रुपए) का भुगतान करें।

अदालत को दिए एक एफिडेबिट में अनिल अंबानी ने कहा कि उन्होंने रिलायंस इन्वेंचर्स को पांच अरब रुपए का कर्ज दिया है। साथ ही अंबानी ने बताया कि रिलायंस इन्वेंचर्स में 1.20 करोड़ इक्विटी शेयरों की कोई कीमत नहीं है। उन्होंने कहा कि न तो उनके पारिवारिक ट्रस्ट और न ही दुनिया के किसी ट्रस्ट में उनका कोई आर्थिक हित है। अनिल अंबानी के प्रवक्ता ने कहा कि उनकी तेजतर्रार और भव्य जीवनशैली को बढ़ाचढ़ा कर बनाई गई धारणाओं के विपरीत अंबानी हमेशा सरल स्वभाव के व्यक्ति रहे हैं। उनके वकील ने कहा कि वह अपने परिवार और वंपनी के लिए समर्पित हैं। एक मैराथन धावक हैं और अत्याधुनिक आध्यात्मिक हैं। वह आजीवन शाकाहारी हैं। धूम्रपान नहीं करते हैं और शहर में बाहर जाने के बजाय अपने बच्चों के साथ घर पर रहकर फिल्म देखना पसंद करते हैं। इससे अलग बातें कहने वाली रिपोर्ट पूरी तरह भ्रामक है।

अदालत ने क्रेडिट कार्ड के बारे में जानकारी चाही तो अंबानी ने कहा कि इस पर उनकी मां कोकिलाबेन अंबानी खर्च करती हैं। क्या है विवाद—यह विवाद 2012 में एक वंपनी को 92.5 करोड़ डॉलर (लगभग 6,937 करोड़ रुपए) के त्रण पर व्यक्तिगत गारंटी के कथित उल्लंघन से जुड़ा है। अंबानी ने ऐसी किसी भी गारंटी के लिए अधिकार प्रादान करने से इंकार किया था, जिसके बाद ब्रिटेन की हाई कोर्ट में यह मामला शुरू हुआ, क्योंकि कर्ज की शर्तों में विवाद को ब्रिटेन की अदालत में सुलझाने की बात थी। ब्रिटेन के हाई कोर्ट ने मई 2020 में अंबानी से कहा था कि वो चीन के तीन बैंकों को जल्द से जल्द 71.70 करोड़ डॉलर (करीब 5,281 करोड़ रुपए) कर्ज की रकम का भुगतान करें, जिसके बाद उन्होंने अपनी सम्पत्ति को शून्य बताया था।

## सशस्त्र बलों में महिलाएं नए पंख, आकाश को छूने के लिए

यदि भारत में महिलाओं की कार्यबल की भागीदारी को इसकी पूरी क्षमता का अहसास हो जाता है तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी दुनिया में भारतीय महिलाओं का डंका गूजेगा।



हाल ही में भारतीय नौसेना ने हेलीकॉप्टर पर्यवेक्षकों के रूप में दो महिला अधिकारियों सब-लेफ्टिनेंट कुमुदिनी त्यागी और सब-लेफ्टिनेंट रीति सिंह के चयन की घोषणा की, जिससे वे पहली महिला हवाई युद्धपोत संचालक बन गईं। इस साल मार्च में सर्वोच्च न्यायालय ने यह माना था कि नौसेना में महिला शॉर्ट सर्विस कमीशन अधिकारी स्थायी आयोग के लिए पात्र है। नौसेना ने पिछले साल दिसंबर में पहली महिला पायलट को भी शामिल किया था। नौसेना में महिलाओं के लिए इन घटनाओं का इतिहासिक मतलब है, पहले महिलाओं को परमानेंट कमीशन की अनुमति नहीं थी। अब सुप्रीम कोर्ट के एक निर्णय से महिलाओं के लिए स्थायी कमीशन की अनुमति दी गई है।

1992 से पहले, महिला अधिकारियों को नौसेना में केवल सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा से मेडिकल स्ट्रीम में शामिल किया गया था। जुलाई 1992 से, नौसेना ने महिलाओं को शामिल करना शुरू किया, शुरू में एक विशेष प्रवेश योजना के माध्यम से और बाद में लघु सेवा आयोग के माध्यम से, केवल नौसेना की चुनिंदा शाखाओं में लिया जाता था। एक बात और ध्यान के लायक है कि वर्तमान में महिलाओं को केवल कमीशन अधिकारियों के रूप में शामिल किया जाता है न कि अन्य रैंक में जो कि जूनियर कमीशन अधिकारी और गैरकमीशन अधिकारियों की श्रेणी में हैं। 2000 के दशक की शुरुआत में मेडिकल और लॉजिस्टिक स्ट्रीम की महिला अधिकारियों को नौसेना के जहाजों पर तैनात किया गया था।

जबकि ये तैनाती केवल चार-पांच वर्षों के लिए चली गई थी, उन्हें विभिन्न कारणों से बाद में बंद कर दिया गया था। पिछले दिसंबर में नौसेना ने डोर्नियर विमान के पायलट के रूप में एक महिला अधिकारी को शामिल करने की घोषणा की, जो कि विंग प्रतिष्ठानों से संचालित विंग विमान हैं। अब, नौसेना ने हेलीकॉप्टर धारा के लिए दो महिला अधिकारियों को पर्यवेक्षकों के रूप में शामिल करने की घोषणा की। पर्यवेक्षक हवाई चालित विमान चालक होते हैं जो नौसेना द्वारा संचालित हेलीकॉप्टर या फिक्स्ड-विंग विमानों पर उड़ान भरते हैं। अब तक महिलाओं को फिक्स्ड विंग एयरक्रफ्ट के लिए पर्यवेक्षक के रूप में शामिल किया गया था जो टेक ऑफ और लैंड ऐश करते हैं। हेलीकॉप्टर स्ट्रीम में प्रवेश का मतलब है कि महिला अधिकारियों को अब प्रंटलाइन युद्धपोतों पर तैनात किया जा सकता है, जहां से हेलीकॉप्टर काम कर सकते हैं।

महिलाओं के इस तरह से उड़ान भरने भर उनके आलोचक इस बात से भी चिंतित हैं कि इन नए प्रवेशकों पर बहुत अधिक मीडिया और जनता का ध्यान उन पर अवांछित दबाव डाल सकता है। जबकि दूरी तरफ महिला अधिकारी इन प्रक्रियाओं में कई पुरुष सैन्य नेताओं के समर्थन की सराहना करती हैं। अनुच्छेद 16 के अनुसार लिंग केवल किसी भी क्षेत्र में असमान और असमान उपचार के लिए आधार के रूप में कार्य नहीं कर सकता है, जिसमें रक्षा बल भी शामिल है। ऐसे में महिलाओं का इस क्षेत्र में आना एक संवैधानिक अधिकार है, यह भी कि अनुच्छेद 14 के तहत समानता के अधिकार को त्वरितगता के अधिकार द्वारा निर्धारित करने की आवश्यकता है जो किसी भी मनाही और पूर्ण निषेध को मना करता है।

इजरायल, जर्मनी, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में युद्धक भूमिकाओं में महिला सैनिकों के उदाहरण हैं। हमारे यहां यह

लैंगिक समानता पेशेवर मानकों की स्थापना और बिना किसी पूर्वाग्रह के उनका पालन करके हासिल की जा सकती है। महिलाओं को शामिल करने की रूपरेखा को एक नीति में शामिल किया जाना चाहिए। महिला अधिकारियों की शालीनता और गरिमा के संरक्षण की चिंता के लिए, कोई प्रतिकूल घटना न हो इसके लिए विस्तृत आचार संहिता होनी चाहिए। जर्मनी, ताइवान और न्यूजीलैंड ऐसे देश हैं जिनकी महिलाएं अपनी सरकारें चला रही हैं। ये तीन अलग-अलग महाद्वीपों में स्थित हैं, तीनों देशों ने अपने पड़ोसियों की तुलना में महामारी को बेहतर ढंग से प्रबंधित किया है। इसी तर्ज पर, संयुक्त राज्य अमेरिका के शोधकर्ताओं द्वारा हाल ही में किए गए एक विस्तृत अध्ययन में कहा गया है कि जिन राज्यों में महिला गवर्नर हैं, उनमें सीओवीआईडी-19 से संबंधित कम मौतें हुई हैं, शायद आंशिक रूप से क्योंकि महिला राज्यपालों ने पहले रहने के घरेलू आदेश जारी करके अधिक निर्णायक रूप से काम किया।

अध्ययन के लेखकों का निष्कर्ष है कि महिला नेता संकट के समय में अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में अधिक प्रभावी हैं। कई आलोचक ऐसे होंगे जो इस निष्कर्ष की विश्वसनीयता पर सवाल उठाएंगे कि डेटा में कमियों को कुछ हद तक सीमित किया गया है। कई यह भी इंगित करेंगे कि एक अध्ययन के आधार पर व्यापक सामान्यीकरण करना खतरनाक है। बेशक इन जैसे अध्ययन अपने पुरुष समकक्षों पर सभी महिला नेताओं की श्रेष्ठता स्थापित नहीं करते हैं। लेकिन हम कह सकते हैं कि अगर महिलाओं को मौका मिले तो वे अपनी श्रेष्ठता को बाखूबी साबित कर सकती हैं।

हाल के अनुभव और इस तरह के अध्ययन से महत्वपूर्ण निहित पक्षपात और नेतृत्व भूमिकाओं में महिला प्रभावशीलता के बारे में धारणाओं से छुटकारा पाने की आवश्यकता है। भारत में ये नियुक्ति नौसेना में महिलाओं के लिए एक और मील का पत्थर है, इस साल मार्च में सुप्रीम कोर्ट ने नौसेना में लघु सेवा आयोग से महिला अधिकारियों की सेवा के अधिकार को स्थायी आयोग (पीसी) प्राप्त करने के लिए पात्र ठहराया था। सशस्त्र बलों में लघु सेवा आयोग का कार्यकाल 10 वर्ष का होता है, जो चार वर्षों तक विस्तारित होता है, जिसके बाद अधिकारी स्थायी आयोग के लिए पात्र हो सकते हैं।

लैंगिक समानता की लड़ाई दिमाग की लड़ाई का सामना करने के बारे में है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है जहां महिलाओं को कानून के तहत उनके न्यायोचित अधिकारों और कार्यस्थल में उचित और समान उपचार के अधिकार से वंचित किया गया है।

पिछले कुछ वर्षों में, अधिक महिलाओं ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के क्षेत्र में दुनिया भर में नाम कमाए हैं। हालांकि जहां तक रोजगार की बात है, महिलाओं के बीच डॉपआउट दर भी विशेष रूप से विवाह मातृत्व और मातृत्व के कारण अधिक है। घर से काम करने जैसे विकल्प हैं फिर भी आज हमें बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के पास बहुत अलग मुद्दे हैं इसलिए विभिन्न क्षेत्रों के लिए अलग-अलग नीतियां होनी चाहिए। यदि भारत में महिलाओं की कार्यबल की भागीदारी को इसकी पूरी क्षमता का अहसास हो जाता है तो वह दिन दूर नहीं जब पूरी दुनिया में भारतीय महिलाओं का डंका गूजेगा।



उत्तर प्रदेश सरकार  
माफिया और अपराधियों  
पर संगठित गिरोह  
अधिनियम (गैंगस्टर  
एक्ट) के तहत शिवंजा  
कसते हुए जिस तरह  
पुलिस कार्रवाई के जरिये  
लगातार कहर बरपाते हुए  
अब तक उनकी 266  
करोड़ रुपए से अधिक की  
संपत्तियां जप्त कर चुकी  
हैं, जो उन्होंने सरकारीगैर  
सरकारी जमीनों पर  
कब्जा कर, लोगों को डरा-  
धमका कर, हत्या, लूट,  
तरहतरह के नशीले पदार्थों  
को बिकवाने, नकल,  
खनन, खादूना माफिया  
आदि अवैध कामों से  
इकट्ठी की थीं। यह समय  
का बदलाव है कि जो  
अपराधी और माफिया  
कमी दहशत पैलाकर  
लूटमार मचाते थे, अब  
योगी सरकार में दहशत  
में हैं और अपनी जान  
बचाने को आत्मसमर्पण  
कर जेल जाने में अपनी  
छैरियत मान रहे हैं।  
अपराधी और माफियों में  
से कुछ विधानसभा से  
लेकर लोकसभा के  
सदस्य भी रह चुके हैं।  
इससे स्पष्ट है कि इन्हें  
तत्कालीन राज्य में  
सजारूढ़ सियासी पार्टियों  
सपा, बसपा का वरदहस्त  
प्राप्त रहा था, जिनसे ये  
संबद्ध रहे थे। वैसे ये  
अपराधी और माफिया  
कोई कुछ वर्षों में पैदा नहीं  
हो गए, बल्कि सालों से  
अपराध कर वे अवैध  
कमाई करते आ रहे हैं। ये  
धरतकरम इन्होंने बगैर  
पुलिस-प्रशासन की  
अनदेखी या सहयोग किए  
होंगे, ऐसा कतई संभव  
नहीं है।

# योगी राज में माफिया पर कहर

श्री. वरुण सिंह मिश्रा

उत्तर प्रदेश सरकार का अपराधियों और माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, वह नीति रूप से स्वागतयोग्य है। इसका दूसरे अपराधियों को भी संदेश पहुंच रहा होगा कि अवैध तरीके से जुटाई उनकी संपत्ति तुर्ब या ध्वस्त हो सकती है।



उत्तर प्रदेश सरकार का अपराधियों और माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, वह निश्चित रूप से स्वागतयोग्य है। इसका दूसरे अपराधियों को भी संदेश पहुंच रहा होगा कि अवैध तरीके से जुटाई उनकी संपत्ति कुर्क या ध्वस्त हो सकती है। इससे उन्हें अपनी अपराधों की निरर्थकता नजर आएगी और अपराध करने से पहले सौ बार सोचेंगे। इसके साथ ही उप सरकार को इन माफियाओं और अपराधियों के मददगार राजनेताओं, नौकरशाहों, पुलिस अधिकारियों/कर्मियों की संपत्ति को भी जप्त करना चाहिए।

उत्तर प्रदेश सरकार माफिया और अपराधियों पर संगठित गिरोह अधिनियम (गैंगस्टर एक्ट) के तहत शिवंजा कसते हुए जिस तरह पुलिस कार्रवाई के जरिये लगातार कहर बरपाते हुए अब तक उनकी 266 करोड़ रुपए से अधिक की संपत्तियां जप्त कर चुकी हैं, जो उन्होंने सरकारीगैर सरकारी जमीनों पर कब्जा कर, लोगों को डरा-धमका कर, हत्या, लूट, तरहतरह के नशीले पदार्थों को बिकवाने, नकल, खनन, खादूना माफिया आदि अवैध कामों से इकट्ठी की थीं। यह समय का बदलाव है कि जो अपराधी और माफिया कभी दहशत पैलाकर लूटमार मचाते थे, अब योगी सरकार में दहशत में हैं और अपनी जान बचाने को आत्मसमर्पण कर जेल जाने में अपनी छैरियत मान रहे हैं। अपराधी और माफियों में से कुछ विधानसभा से लेकर लोकसभा के सदस्य भी रह चुके हैं। इससे स्पष्ट है कि इन्हें तत्कालीन राज्य में सत्तारूढ़ सियासी पार्टियों सपा, बसपा का वरदहस्त प्राप्त रहा था, जिनसे ये संबद्ध रहे थे। वैसे ये अपराधी और माफिया कोई कुछ वर्षों में पैदा नहीं हो गए, बल्कि सालों से अपराध कर वे अवैध कमाई करते आ रहे हैं। ये धरतकरम इन्होंने बगैर पुलिस-प्रशासन की अनदेखी या सहयोग किए होंगे, ऐसा कतई संभव नहीं है। इनमें ये सभी बराबर के गुनाहगार हैं, लेकिन विडंबना यह है कि जिनसे मिलकर इन सभी ने गुनाहों को अंजाम दिए, वे ही अब शासन-सत्ता बदलने के बाद उन्हें गिरफ्तार करने के साथसाथ उनके गुनाहों

की इमारतों को ढहा रहा हैं। इनके सिवाय वे सियासी पार्टियां सब कुछ जानते हुए अपना उम्मीदवार बनाया और फिर वे लोग अपने निजी फायदे या फिर जाति और मजहब को देखकर अपना वोट देकर लोकतंत्र के मंदिर विधानसभा और लोकसभा में पहुंचाया।

इस तरह उन्होंने न केवल गुनाहगारों को मजबूत बनाया, बल्कि लोकतंत्र को अपूरणीय क्षति पहुंचाई है। वैसे अब सवाल यह है कि अब तक इनके खिलाफ पुलिस-प्रशासन ने कार्रवाई क्यों नहीं की? ये जब सरकारी-गैर सरकारी जमीन पर कब्जा कर रहे थे, तब इन्हें क्यों नहीं रोका गया? राजनीति, नौकरशाही, पुलिस, अपराधियों के इस गैरकानूनी गठजोड़ के चलते सालों से उत्तर प्रदेश के लोगों को दहशत के माहौल में जीने को मजबूर होना पड़ा और छोटे बड़े उद्योगपति, व्यापारी उन्हें चौथ देने को विवश होना पड़ा। इस भयावह स्थिति को देखते हुए बहुत से उद्योगपति ने यहां अपना कारोबार करने के बजाय उसे समेटना बेहतर समझा। दुर्भाग्य बात यह है कि इसके बाद भी खुद को गरीबों और दलितों की एकमात्र ठेकेदार बताने-जताने वाली बसपा और वुचलों-पिछड़ों की पार्टी समाजवादी अपने कथित सुशासन में गुनाहगारों और माफियाओं को खुला छोड़े रखा। ये सवाल तो इनसे पूछा जाना चाहिए।

जब से उप्र की सत्ता मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने संभाली है, तब से हर तरह के अपराधियों की शामत आ गई है। बड़ी संख्या में अपराधियों को पुलिस मुठभेड़ में मारा जा चुका है, जिनकी वजह से लोग अपना घर-द्वार छोड़कर दूसरे नगरों/राज्यों में बसने को मजबूर होना पड़ा है।

खेद की बात यह है कि इसके बाद कुछ सियासी पार्टियों के नेताओं ने मुख्यमंत्री योगी जी की इस पहल का स्वागत करने के स्थान पर बेकसूरों की जान लिए जाने के साथ मानवाधिकारों के उल्लंघन करने जैसे गंभीर आरोप लगाए गए। इसके बावजूद वे उनके दबाव में नहीं आए।

मुख्यमंत्री योगी जी ने स्पष्ट कहा कि अपराधी अपराध करना छोड़ दें या फिर राज्य छोड़ दें या गोली खाने को तैयार रहें। उन्होंने शुरुआत में ही युवतियों/महिलाओं से छेड़छाड़ करने वालों की निगरानी और उनके खिलाफ कार्रवाई की।

तब भी कुछ सियासी पार्टियों ने पुलिसकर्मियों पर बेकसूरों को नाजायज सताने के आरोप लगाए। योगी सरकार ने अपराधियों और माफियों द्वारा अवैध रूप से अर्जित संपत्ति को कुर्क करने से लेकर उन मकानों आदि को ध्वस्त करना शुरू कर दिया, जो उन्होंने सरकारी-गैरसरकारी जमीन पर नाजायज कब्जा कर बनवाए हुए थे। इसी कड़ी में गत 25 सितंबर तक विधायक मुख्तार अंसारी और बाहुबली और पूर्व सांसद अतीक अहमद के नेटवर्क से 350 करोड़ रुपयों मूल्य की चल-अचल संपत्ति मुक्त कराई जा चुकी है। अतीक और उसके गुर्गों के कब्जे से 250 करोड़ रुपए की अचल संपत्ति कराई चुकी है।

24 सितंबर तक पुलिस ने मुख्तार अंसारी और उसके गुर्गों के अवैध स्लाटर हाउस पर कार्रवाई की गई है। अब तक उसके कब्जे से करीब 50 बीघा सरकारी जमीन मुक्त कराई जा चुकी है। मुख्तार के परिवार के 21 शस्त्र लाइसेंस निरस्त किए गए हैं। अतीक अहमद के 39 गुर्गों के 39 गुर्गों की हिस्ट्रीशीट खोलने के साथ अतीक की अब तक छह संपत्तियों की कुर्की की जा चुकी है। अतीक अहमद की प्रयागराज, दिल्ली, लखनऊ, बलरामपुर समेत दूसरे बैंकों की खातों की जांच की जा रही है। इसके अलावा उसकी 2014 के लोकसभा चुनाव में दाखिल शपथपत्र की भी जांच की जा रही है। गत 22 सितंबर को प्रयागराज स्थित पूर्व सांसद और माफिया सरगना अतीक अहमद के चकिया स्थित पांच बीघे जमीन में बने आलीशान आशियाने को भी 22 सितंबर, मंगलवार दोपहर ढहा दिया गया, जिसका सपा के कुछ कार्यकर्ताओं ने विरोध किया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के माफिया सरगना सुंदर भाटी की संपत्ति कुर्क की जा

चुकी है 27 सितंबर को दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुख्यात सुनील राठी के आर्थिक साम्राज्य को ध्वस्त करने में लगी। इसी मकसद से उसके बागपत जिले के टीकरी गांव में लगभग सवा करोड़ रुपए की संपत्ति को कुर्क कर ली। इसमें तीन मकान और उनकी पत्नी की लग्जरी फार्च्यूनर कार शामिल है। 28 सितंबर को रायबरेली के हिस्ट्रीशीटर खान मुबारक की संपत्ति जब्त की गई लखनऊ कमिश्नरेट में पुलिस कुख्यात मुख्तार अंसारी, अतीक अहमद, सलीम, रुस्तम, सोहराब, खान मुबारक समेत अन्य माफियों के गुर्गों पर शिवंजा कसा है। लखनऊ में एक साथ 42 स्थानों छापेमारी की गई। पुलिस ने मुख्तार के करीबी अभिषेक बाबू और शहजादे वुरैशी समेत 11 अपराधियों को गिरफ्तार भी किया गया है। माफिया खान मुबारक और उसके गिरोह पर शिवंजा कसा है।

इसी 17 सितंबर को विधायक मुख्तार अंसारी के गिरोह आईएस-191 के आर्थिक मददगार हिस्ट्रीशीटर राजेश सिंह उर्फ राजन की 35.23 लाख की संपत्ति जब्त की गई। इससे पूर्व अगस्त में भी पुलिस ने आरोपित की 6.50 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त की थी। पुलिस ने गुरुवार, 17 सितंबर को दोपहर पिपरीडीह स्थित आरोपित राजन सिंह द्वारा अपराध से अवैध रूप से अर्जित किय ग्राम खरगजेपुर भूखंड को गैंगस्टर एक्ट के तहत जब्त किया गया। इसी 7 सितंबर को प्रयागराज के अहमदाबाद जेल में बंद पूर्व सांसद माफिया अतीक अहमद का मकान प्रशासन ने को गिरवा दिया। यह मकान कब्जा करके बनवाया गया था। इसकी जमीन 12 करोड़ रुपए की है। जिला प्रशासन, पुलिस, प्रयागराज विकास प्राधिकरण, नगर निगम की संयुक्त टीम ने अतीक के विरुद्ध यह कार्रवाई की।

सुबह 11 बजे से एसीएम द्वितीय प्रेम चंद्र की अगुवाई में चार जेसीबी के जरिये मकान ढहाने की कार्रवाई पूरी की गई। अब सिविल लाइंस, चकिया, करेली में स्थित अतीक संपत्तियां ध्वस्त करने तैयारी चल रही है। सीज संपत्ति की कीमत करीब 60 करोड़ रुपए है। पीडीए उपाध्यक्ष अंकित अग्रवाल का कहना है कि नजूल जमीन पर दो अवैध निर्माण चिन्हित हुए थे, जिन पर कार्रवाई की गई। नजूल एवं सरकारी जमीन पर किए गए अन्य अवैध निर्माणों को भी चिन्हित किया जा रहा है। 7 सितंबर के प्रथम सप्ताह में प्रदेश में अवैध शराब का धंधा करने वाले 85 लोगों को गिरफ्तार करके जेल भेजा गया है। एटा में 1360 लीटर स्पिरिट और भारी मात्रा में खाली बोतल ढक्कन व नकली क्यूआर कोड व असलहों के साथ दो व्यक्तियों को मौके से गिरफ्तार किया गया। आगरा में भी कोई डेढ़ दर्जन से अधिक भूमाफिया चिन्हित किए गए। इनमें से कुछ की संपत्ति कुर्क की चुकी है। अब कानपुर के बिकरू कांड में विकास दुबे और उनके गिरोह के लोगों को मुठभेड़ मारे जाने को बसपा, सपा ब्राह्मणों की हत्या का आरोप लगाकर सरकार को घेर रही हैं। इतना ही नहीं, दबी आवाज में इस कार्रवाई को मजहबी नजर से भी देख रही है और अल्पसंख्यकों की हमदा बटोरन की कोशिश में लगी हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार का अपराधियों और माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, वह नीति रूप से स्वागतयोग्य है। इसका दूसरे अपराधियों को भी संदेश पहुंच रहा होगा कि अवैध तरीके से जुटाई उनकी संपत्ति कुर्क या ध्वस्त हो सकती है। इससे उन्हें अपनी अपराधों की निरर्थकता नजर आएगी और अपराध करने से पहले सौ बार सोचेंगे। इसके साथ ही उप सरकार को इन माफियाओं और अपराधियों के मददगार राजनेताओं, नौकरशाहों, पुलिस अधिकारियों/कर्मियों की संपत्ति को भी जप्त करना चाहिए।

कांकर स्टोरी

# कृषि विधेयक

## भ्रम फैलाने वाले नेता और राजनीतिक दल किसान विरोधी हैं



अनसूया

कृषि संबंधी विधेयकों के पास होने के बाद देश के अनेक हिस्सों में राजनीति का गरमाना जितना स्वाभाविक है, उतना ही चिंताजनक भी है। विरोधी दलों के नेताओं द्वारा किसानों के प्रदर्शन के सहारे मोदी सरकार की छवि को पूंजीपतियों वाली सरकार के तौर पर पेश किया जा रहा है।

कांग्रेस फिर 'सड़क' पर है। किसानों के नाम पर कांग्रेसी जगह-जगह उग्र प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शन का स्वरूप ठीक वैसा ही है जैसा उसने भूमि अधिग्रहण बिल, कश्मीर से धारा 370 हटाने, एक बार में तीन तलाक, सर्जिकल स्ट्राइक, राफेल विमान खरीद, नागरिकता संशोधन बिल (सीएए), अयोध्या विवाद आदि के समय किया था। यानि सच्चाई को छिपा कर झूठ का आभामंडल तैयार करने वाला। कोरोना महामारी एवं पाकिस्तान और खासकर चीन से तनातनी के बीच भी कांग्रेस प्रदर्शन कर रही है। आम कांग्रेसी तो दूर राहुल गांधी तक चीन के प्रवक्ता की तरह व्यवहार कर रहे हैं। कांग्रेस उन मौकों पर कुछ ज्यादा उतावली दिखाई देती है, जब किसी राज्य में चुनाव होने को होते हैं। बिहार और पश्चिम बंगाल में इसी वर्ष तो पंजाब जहां कांग्रेस की सरकार है, में करीब दो वर्षों के बाद विधान सभा चुनाव होने हैं, इसलिए कांग्रेस नहीं चाहती है कि प्रधानमंत्री मोदी किसानों के हित में कोई ऐसा फैसला लें जिसका खामियाजा कांग्रेस को चुनाव के मैदान में भुगतना पड़े।

चुनावी माहौल में कांग्रेस को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 'किसान प्रेम' और उसके चलते लिए जा रहे कृषि से संबंधित फैसले रास नहीं आ रहे हैं। दोनों सदनों में कांग्रेसी सांसद मोदी सरकार की नीयत पर सवाल उठा रहे हैं। और तो और पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह भी अपनी सरकार और कांग्रेस के चुनावी घोषणा पत्र में किए गए वायदों, जिसे मोदी सरकार पूरा कर रही है, को भूल कर ओछी सियासत में लगे हैं। किसान बड़ा वोट बैंक है इसलिए हमले की रफ्तार भी तीव्र है। कांग्रेस के सुर ठीक वैसे ही हैं जैसे 2015 में मोदी सरकार के प्रथम कार्यकाल के दौरान भूमि अधिग्रहण बिल के समय देखने को मिले थे, तब पार्टी उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने एलान कर दिया था कि मोदी सरकार द्वारा किसानों के हितों पर डाका डाल करके औद्योगिक घरानों से लिए गए भारी कर्ज को चुकाने के लिए भूमि अधिग्रहण विधेयक लाया गया है। उस समय राहुल के साथ-साथ पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी कहा था कि नया विधेयक 2013 के कानून को कमजोर करने के लिए लाया गया है।

कांग्रेस का विरोध समझ में आता, यदि उसकी सोच किसान हितों से जुड़ी नजर आती, लेकिन नजारा दूसरा है। किसानों के बहाने कांग्रेस मोदी सरकार को झुकाना चाहती है। इसी के चलते कांग्रेस कृषि संबंधी उन विधेयकों का विरोध कर रही है, जिसे वह अपने कार्यकाल में कानून जामा पहनाना चाहती थी, लेकिन इच्छाशक्ति के अभाव में वह ऐसा कर नहीं पाई थी। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एक कार्यक्रम के दौरान किसानों को उनकी फसल पूरे देश

में कहीं भी बेचने देने की छूट मिले, इसकी वकालत करते हुए कहा था कि इससे किसानों को उनकी पैदावार का उचित दाम मिलेगा और बिचैलियों की भूमिका काफी सीमित हो जाएगी, लेकिन यही काम जो मोदी सरकार ने कर दिखाया तो कांग्रेसी प्रलाप कर रहे हैं। किसानों को उल्टी-सीधी जानकारी देकर भड़काया जा रहा है। कांग्रेस ने कृषि संबंधी विधेयक पास होने के बाद उसके विरोध में जो बिगुल फूंक रखा है, उसके लिए मोदी सरकार भी कम जिम्मेदार नहीं है।

अगर विधेयक पास कराने से पूर्व किसानों को विश्वास में ले लिया जाता तो शायद कांग्रेस को मुखर होने का बड़ा मौका नहीं मिलता। कांग्रेस तो कांग्रेस जब भाजपा गठबंधन के प्रमुख घटक आकाली दल की मंत्री हरसिमरत कौर को इस बात का मलाल हो कि विधेयक पास करने से पूर्व आकाली दल को विश्वास में नहीं लिया गया तो समझा जा सकता है कि मोदी सरकार से कहीं न कहीं चूक तो हुई है। वैसे ऐसे लोग भी कम नहीं हैं जिनको लगता है कि पंजाब की सियासत में किसानों के दबदबे को देखते हुए आकाली दल कोटे की मंत्री ने मंत्री पद छोड़ा है।

बहरहाल, कृषि संबंधी विधेयकों के पास होने के बाद देश के अनेक हिस्सों में राजनीति का गरमाना जितना

विरोधी दलों के नेताओं द्वारा किसानों के प्रदर्शन के सहारे मोदी सरकार की छवि को पूंजीपतियों वाली सरकार के तौर पर पेश किया जा रहा है। मोदी सरकार भले किसानों के लिए अच्छा कानून लाई हो, लेकिन उसे विरोधियों की चालबाजियों के चलते बड़ा सियासी नुकसान न हो, इसके लिए मोदी सरकार को किसानों का विश्वास जीतने का क्रम लगातार जारी रखना चाहिए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन विधेयकों के विरोध में केंद्रीय मंत्री हरसिमरत कौर बादल ने न सिर्फ इस्तीफा दे दिया, बल्कि उनका इस्तीफा स्वीकार भी कर लिया गया। खैर, सरकार ने अपनी ओर से साफ संकेत दे दिया है कि वह इस मामले में पीछे नहीं हटेगी। अगर कोई फैसला देश या किसी समाज के हित में लिया जा रहा है तो सरकार को दबाव में आकर पीछे हटना भी नहीं चाहिए।



स्वाभाविक है, उतना ही चिंताजनक भी है। विरोधी दलों के नेताओं द्वारा किसानों के प्रदर्शन के सहारे मोदी सरकार की छवि को पूंजीपतियों वाली सरकार के तौर पर पेश किया जा रहा है। मोदी सरकार भले किसानों के लिए अच्छा कानून लाई हो, लेकिन उसे विरोधियों की चालबाजियों के चलते बड़ा सियासी नुकसान न हो, इसके लिए मोदी सरकार को किसानों का विश्वास जीतने का क्रम लगातार जारी रखना चाहिए।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन विधेयकों के विरोध में केंद्रीय मंत्री हरसिमरत कौर बादल ने न सिर्फ इस्तीफा दे दिया, बल्कि उनका इस्तीफा स्वीकार भी कर लिया गया। खैर, सरकार ने अपनी ओर से साफ संकेत दे दिया है कि वह इस मामले में पीछे नहीं हटेगी। अगर कोई फैसला देश या किसी समाज के हित में लिया जा रहा है तो सरकार को दबाव में आकर पीछे हटना भी नहीं चाहिए। मगर यह भी सच है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कृषि विधेयकों के पास होने के बाद जिस तरह से किसानों को समझा रहे हैं, अगर वह पहले यह कदम उठा लेते तो ज्यादा बेहतर रहता। पीएम ने कृषि संबंधी विधेयकों की पैरोकारी करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि जो किसानों से कमाई का बड़ा हिस्सा खुद ले लेते हैं, उनसे किसानों को बचाने के लिए इन विधेयकों को लाना बहुत जरूरी था। उन्होंने यह भी कहा कि ये तीनों विधेयक किसानों के लिए रक्षा कवच बनकर आए हैं। प्रधानमंत्री की भावना के अनुरूप ही किसानों को विश्वास में लेने की जरूरत है।

लब्बोलुआब यह है कि कोई भी फैसला लेने से पूर्व किसी भी सरकार के लिए जनभावनाओं को ध्यान में रखते हुए जनता से संवाद बनाना जरूरी है। इसी तरह से विपक्ष को भी विश्वास में लिया जाना चाहिए। यह सब लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा है। लेकिन यह सिक्के का एक पहलू है, जब विपक्ष सरकार के किसी भी फैसले या निर्णय का विरोध के नाम पर विरोध करेगा तो सरकार ऐसे विपक्ष से संवाद बनाना उचित नहीं समझेगी। बात हरसिमरत कौर के इस्तीफे की है तो सब जानते हैं कि पंजाब और हरियाणा की राजनीति किसानों के इर्दगिर्द घूमती रहती है। पार्टियों और नेताओं में खुद को किसान सिद्ध करने की होड़ रहती है। ऐसे में अकाली दल के केंद्रीय मंत्रिमंडल से बाहर जाने का सीधा अर्थ है कि अकाली दल मोदी सरकार के लिए किसानों की नाराजगी मोल नहीं लेना चाहता है। वह विरोध को झेलने की स्थिति में नहीं है। हरसिमरत कौर के ऐन मौके पर इस्तीफा देने के कारण ही प्रधानमंत्री ने कहा था कि राजनीतिक पार्टियों द्वारा यह दुष्प्रचार किया जा रहा है कि किसानों से धान-गेहूं इत्यादि की खरीद सरकार द्वारा नहीं की जाएगी, जो झूठ है।

उम्मीद है कि कृषि संबंधी विधेयकों के पास होने के बाद फैली भ्रांति प्रधानमंत्री के किसानों को संबोधन के बाद काफी हद तक दूर हो गई होगी। जो नेता खुद को किसानों का पक्षधर बताते हैं, उन्हें आगे आकर किसानों के लाभ को सुनिश्चित करना चाहिए। कृषि क्षेत्र में खुला बाजार और कंपनियां हमारे देश में नई बात नहीं है, इस खुले बाजार में भी किसानों के हितों की रक्षा करना सरकारों की जिम्मेदारी है। देश में किसानों की बदहाली से सभी वाकिफ हैं, इसलिए उनकी हरेक चिंता का निवारण करना सरकारों का प्राथमिक दायित्व है। यह भी ध्यान रहे, किसानों का शोषण करने वाले लोग विदेश से नहीं आते, यहीं हमारे बीच से खड़े होते हैं। कृषि और कृषकों के दुश्मन दलालों और कंपनियों को स्थानीय स्तर पर ही संगठन की शक्ति से नियंत्रित करना होगा।

किसान नेता अगर साफगोई से विधेयक के बारे में किसानों को समझाएं तो हो सकता है कि कुछ दिनों में विरोध के सुर फीके पड़ जाएं। जहां तक बात किसानों के लिए मोदी सरकार द्वारा लिए गए फैसलों की है तो, पूरी दुनिया के किसान जिस कृषि बाजार और व्यवस्था के सहारे फलफूल रहे हैं, उसी व्यवस्था से भारत के किसानों को नुकसान होगा, ऐसा नहीं सोचा जा सकता है। फिर ऐसे निर्णय तो पूर्ववर्ती मनमोहन सरकार भी लेना चाहती थी। तमाम राज्यों की गैर भाजपाई सरकारों को घटिया सियासत से बाज आना चाहिए। जब प्रधानमंत्री मोदी बार-बार कह रहे हैं कि किसानों के हित के साथ-साथ राज्य सरकारों को मंडी से मिलने वाले राजस्व में कोई बदलाव नहीं किया गया, तो बेकार का हौवा खड़ा करना देशहित में नहीं है। चुनाव आते हैं, चले जाते हैं, लेकिन देश सर्वोपरि होता है। यह किसी को नहीं भूलना चाहिए। किसानों के लिए जो 'कल' मनमोहन सरकार में सही था वह 'आज' मोदी सरकार के समय गलत कैसे हो सकता है।



डॉ. योगेश ठाकुर

साक्षात्कार-किसान नेता वीएम सिंह

## खेती विहीन हो जाएगा अन्नदाता



पहला कृषि उपज व्यापार और वाणिज्य विधेयक-2020 है जिसमें पारंपरिक खेती के खत्म होने के संकेत हैं। वहीं, दूसरा कृषि कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार विधेयक-2020 है, इसमें फसल मूल्यों की गारंटी कहा है। कृषि सुधार विधेयकों के विरोध में किसान कई राज्यों में प्रदर्शन कर रहे हैं। हरियाणा, पंजाब व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ज्यादा जोर है। संसद में पारित दो विधेयकों को लेकर पक्ष-विपक्ष में तकरार जैसी स्थिति है। विधेयकों को सरकार जहां किसानों के हितों में बता रही है, वहीं किसान नेताओं का तर्क है कि इस नई व्यवस्था से सरकार बड़ी चालाकी से परंपरागत खेती को खत्म करके कॉर्पोरेट खेती को ओर पहला कदम बढ़ा रही है। इसी बात का विरोध किसान के तमाम संगठन कर रहे हैं। उनकी अगुआई अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष वीएम सिंह कर रहे हैं। उनसे डॉ. रमेश ठाकुर ने विस्तृत बातचीत की। पेश हैं बातचीत के मुख्य अंश।

**प्रश्न- कृषि सुधार विरोध में आपको कहां खामियाँ दिखती हैं?**

उत्तर- कोई एक खामी हो तो आपको बताऊँ, खामियाँ ही खामियाँ हैं। मंडियों को खत्म करने का केंद्र सरकार का सोचा समझा प्लान है। खेती में कॉर्पोरेट का आगमन होने वाला है। निजी कंपनियों को बढ़ावा देने की कोशिशें की जा रही हैं। अगर ऐसा हुआ तो किसान खेती बाड़ी से पैदल हो जाएगा और उनको फसल का उचित मूल्य भी नहीं मिलेगा। पहला कृषि उपज व्यापार और वाणिज्य विधेयक-2020 है जिसमें पारंपरिक खेती के खत्म होने के संकेत हैं। वहीं, दूसरा कृषि कीमत आश्वासन और

कृषि सेवा पर करार विधेयक-2020 है, इसमें फसल मूल्यों की गारंटी कहा है। दोनों से अन्नदाताओं को जरा भी फायदा होने वाला नहीं, सिवाए नुकसान के।

**प्रश्न- सरकार का तर्क है विधेयकों से खेती में नई क्रांति आएगी।**

उत्तर- हमारा विरोध इसी बात को लेकर ही तो है। हम यही मांग कर रहे हैं। दोनों विधेयकों से फायदे की एबीसीडी कोई बताए तो भला। प्रधानमंत्री आएँ और सार्वजनिक रूप से हमें बताएं और तसल्ली दें। विधेयकों के लागू होने से किसान कैसे लाभान्वित होंगे, उसका मसौदा बताया जाए। अगर नहीं बताते हैं तो हम उन्हें ये जरूर बताएंगे कि इन विधेयकों से नुकसान किस तरह का होगा। कुल मिलाकर बात सिर्फ इतनी-सी है, प्रधानमंत्री हिंदुस्तान की समूची खेती को अंबानी-अड़ानी को सौंपना चाहते हैं। दोनों को फायदा दिलवाने के लिए वह कोई भी नुकसान उठा सकते हैं।

**प्रश्न- ऐसे तो किसानों का खेती से मोह भंग हो जाएगा?**

उत्तर- मोह भंग होगा हो गया है। देखिए, खेती लगातार घाटे का सौदा बनती जा रही है, इसलिए अब कोई खेती बाड़ी करना नहीं चाहता। सरकार ऐसा चाहती है। किसानों का मोह भंग हो और सरकार खेती पर कब्जा करके उसका तुरंत कॉर्पोरेटकरण करे। ऐसे माहौल में वित्तमंत्री जीरो बजट खेती की बात करती हैं, उनसे कोई पूछे क्या उस लायक जमीनें बची हैं? जीरो बजट खेती के तहत खेती के लिए जरूरी बीज, खाद-पानी आदि का इंतजाम

प्राकृतिक रूप से ही किया जाता है। इसके लिए मेहनत जरूर अधिक लगती है, लेकिन खेती की लागत बहुत कम आती है और कीमत अधिक मिलती है। जीरो बजट खेती में लागत बहुत कम हो जाती है, इसलिए किसानों को फसल को उगाने के लिए कर्ज लेने की जरूरत नहीं होगी और किसान कर्ज के जाल में नहीं आएंगे।

**प्रश्न- आपको ऐसा क्यों लगता है कि सरकारें किसानों को गंभीरता से नहीं लेती?**

उत्तर- गंभीरता से लेतीं, तो आज ऐसी नौबत नहीं आती। पिछले तीन दशकों से केंद्र में आनी वाली सभी सरकारें कुम्भकर्ण की तनिद्रा में लीन रही हैं। उन्हें जगाने के लिए हमने पिछले साल किसान यात्रा के रूप में पूरे देश में भ्रमण किया। हमसे वायदे किए गए, लेकिन समय के साथ भुला दिए गए। तब हमारी यात्रा करीब बीस प्रांतों से होकर दिल्ली पहुंची थी। मुहिम में देश के कोने-कोने से आए किसानों ने सरकार को ललकारा था। अल्टीमेटम दिया था कि अभी भी वक्त है सुधर जाओ। देश का अन्नदाता इस वक्त सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। पर किसी को कोई परवाह नहीं? आंदोलन के जरिए पूरे भारत के किसानों को एक संदेश देना था कि मौजूदा केंद्र सरकार पूंजीपतियों की है, न कि किसानों और गरीबों की?

**प्रश्न- केंद्र सरकार किसान नेताओं पर आरोप लगा रही है कि वह किसानों को गुमराह कर रहे हैं?**

उत्तर- किसानों और किसान नेताओं के बीच संबंध खराब करने की सरकार की ये सुनियोजित साजिश मात्र है। उनको पता है जब किसानों के पक्ष में आवाज़ उठाने वाले कोई नहीं होगा, तो वह अपनी मनमानी पर उतर आएंगे। लेकिन हम ऐसा होने नहीं देंगे। देश का किसान किस कदर हताश-पेशान है, इसका अंदाजा भी नरेंद्र मोदी नहीं लगा सकते हैं। जिस देश की जनसंख्या का सत्तर फीसदी हिस्सा किसान आबादी से लबरेज हो और वही पेशान हो, इससे बड़ी विडंबना भला क्या होगी। मोदी ने किसानों से लच्छेदार बातें और लालच के बल पर बेवकूफ बनाकर दोबारा से सत्ता हासिल की है।

**प्रश्न- केंद्र सरकार का दावा है कि किसानों के लिए अप्रत्याशित कदम उठाए जा रहे हैं।**

उत्तर- बातें करने में ये लोग माहिर खिलाड़ी हैं। सुशासन एक लोकप्रवर्तित अवधारणा है और समुचित न्याय जनता को मिले इसकी उम्मीद सरकारों से होती है। पर, इस मोर्चे पर सरकारें पूरी तरह विफल रही हैं। किसानों-गरीबों की बुनियादी आवश्यकताओं से सरकारों ने किनारा किया हुआ है। आर्थिक आयातों के आधार पर युक्त व्यवस्थाओं को समुचित रूप देना हो या सुशासनिक माहौल, सभी क्षेत्रों में इस सरकार ने गलत कृत्य किया है। नोटबंदी और जीएसटी की आड़ में देश के किसान लुट चुके हैं। सदियों से भारत का आर्थिक जीवन मूल्य किसानों पर निर्भर रहा है उसकी रीढ़ किसान रहे हैं। लेकिन अब उनकी कमर टूट चुकी है।



दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में संक्रमितों के स्वस्थ होने की रज्जार अधिक और मौतों का आंकड़ा बेशक हमारे यहां कम हों, पर इस आधार पर लापरवाही बरतने का मौका नहीं मिल सकता। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय का कहना है कि आरटीपीसीआर जांच सबसे बेहतर है। आरटीपीसीआर जांच करना जरूरी है। मगर राज्य सरकारें इसे गंभीरता से नहीं ले रही हैं। देश में बेहतर जांच की सुविधाएं तक हम नहीं जुटा पा रहे हैं, कई राज्य सरकारें इस महामारी से पार पाने के लिए आर्थिक संसाधनों पर्याप्त न होने का रोना रो रही हैं। ऐसे में यह ठीक है कि स्वास्थ्य के मोर्चे पर राज्य सरकारों को ही अगली कतार में लड़ना है, पर उन्हें जरूरी संसाधन और सहयोग उपलब्ध कराने के मामले में केंद्र को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

## कोरोना, लॉकडाउन

# वैक्सीन का आश्वासन...सुनते सुनते थक चुका है देश

प्रारंभिक दौर में सरकार एवं शासकों ने जिस तरह की सक्रियता, कोरोना पर विजय पाने का संकल्प एवं अपेक्षित प्रयत्नों का कर्म एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव देखने को मिला, अब वैसा वातावरण न बनना लोगों को अधिक निराश कर रहा है।



कोरोना महामारी के प्रकोप से निपटने की चुनौतियां लगातार बढ़ रही हैं हर दिन संक्रमण और संक्रमण से होने वाली मौतों के आंकड़े नई ऊंचाई छू रहे हैं। भारत में कोरोना मामलों का रिकॉर्ड स्तर पर बढ़ना जारी है। दुनिया में सबसे तेजी से कोरोना संक्रमण अपने देश में ही बढ़ रहा है। देश में बुधवार को रिकॉर्ड 95,735 नये संक्रमण के एवं 1172 मौत के मामले सामने आए हैं। इस सप्ताह में संक्रमण के लगभग हर दिन नब्बे हजार मामले एवं हर दिन एक हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो रही है। कोरोना संक्रमितों की कुल संख्या 44 लाख पार पहुंच गई है। दुनिया में अभी संक्रमण के सबसे ज्यादा मामले अमेरिका में हैं। लेकिन हम अमेरिका, ब्राजील जैसे उन देशों को भी पीछे छोड़ कर आगे बढ़ गए हैं, जहां दुनिया में अभी तक सबसे अधिक मामले दर्ज हो रहे थे। यह निस्संदेह केंद्र और राज्य सरकारों के लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

कहा जा रहा है कि जांच में तेजी आने के कारण संक्रमितों की पहचान भी तेजी से हो रही है, इसलिए आंकड़े कुछ बढ़े हुए दर्ज हो रहे हैं। पर कुछ लोगों को शिकायत है कि जांच में अपेक्षित गति नहीं आ पा रही है। पुख्ता जांच एवं वैक्सीन का आश्वासन, उजाले का भरोसा सुनते-सुनते लोग थक गए हैं। अब तो कोरोना मुक्ति का उजाला एवं उपचार हमारे सामने होना चाहिए। इस अभूतपूर्व संकट के लिए अभूतपूर्व समाधान खोजना ही होगा। प्रारंभिक दौर में सरकार एवं शासकों ने जिस तरह की सक्रियता, कोरोना पर विजय पाने का संकल्प एवं अपेक्षित प्रयत्नों का कर्म एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव देखने को मिला, अब वैसा वातावरण न बनना लोगों को अधिक निराश कर रहा है।

भारतीय जीवन में कोरोना महामारी इतनी तेजी से फैल रही है कि उसे थामकर रोक पाना किसी एक व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं है। अभी अनिश्चितताएं एवं आशंकाएं बनी हुई हैं कि अगर सामान्य जनजीवन पर लगी बंदिशें इसी तरह कम की जाती रहीं तो कोरोना के बेकाबू होकर घर-घर पहुंच जाने का खतरा बढ़ने की संभावनाएं अधिक हैं। कोरोना संक्रमण के वास्तविक तथ्यों की बात करें तो हालात पहले से ज्यादा चुनौतीपूर्ण एवं जटिल हुए हैं, अभी अंधेरा घना है। खुद केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने भी असंतोष व्यक्त किया है कि कुछ राज्यों ने जांच के मामले में मुस्तेदी नहीं दिखाई, जिसके चलते वहां संक्रमण के मामले तेजी से बढ़े। जब जांच में तेजी नहीं आ पा रही तब कोरोना के मामले दुनिया के अन्य देशों की तुलना में हमारे यहां चिंताजनक रफ्तार से बढ़ रहे हैं, तो इसमें और तेजी आने पर क्या स्थिति सामने आएगी, अंदाजा लगाया जा सकता है।

कोरोना महामारी को नियंत्रित करने के लिये लॉकडाउन, बंदी और सामाजिक दूरी के पालन को लेकर सख्ती आदि उपाय आजमाए जा चुकने के बाद भी संक्रमण तेजी से फैल रहा है, तो इस पर काबू पाने के लिए कोई नई, प्रभावी और व्यावहारिक रणनीति बनाने पर विचार होना चाहिए। यह सही है कि जांच में तेजी आएगी तो संक्रमितों की पहचान भी जल्दी हो सकेगी और उन्हें समय पर उपचार उपलब्ध कराया जा सकेगा। मगर जांच के मामले में राज्य सरकारों का रवैया कुछ ढीला-ढाला एवं उदासीनताभरा ही नजर आ रहा है। दिल्ली सरकार ने जरूर इजाजत दे दी है कि अब बिना डॉक्टर की पर्ची के भी लोग खुद जांच करा सकते हैं। दिल्ली में

जांच एवं उपचार की सुविधाएं दूरदराज के गांवों से अधिक हैं, उन गांवों के लोगों की परेशानियों का अंदाज लगाया जा सकता है, जो इस वक्त बाढ़ की विभीषिका झेल रहे हैं या फिर जिन गांवों तक सड़क भी नहीं पहुंची है और लोगों को मरीज को चारपाई पर ढोकर अस्पताल ले जाना पड़ता है। वे तो इसी उजाले की बाट जोह रहे हैं कि सरकारी सहायता मिले और उनकी मुफ्त जांच हो सके। राज्यों के पास ऐसा नेतृत्व नहीं है, जो कोरोना महाव्याधि का सर्वमान्य हल दे सके एवं सब कसौटियों पर खरा उतरता हो, तो क्या नेतृत्व उदासीन हो जाये? ऐसा दवा या वैक्सीन नहीं, जो कोरोना के घाव भर सके, तो क्या उपचार के प्रयास ही न हों?

दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में संक्रमितों के स्वस्थ होने की रफ्तार अधिक और मौतों का आंकड़ा बेशक हमारे यहां कम हों, पर इस आधार पर लापरवाही बरतने का मौका नहीं मिल सकता। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय का कहना है कि आरटीपीसीआर जांच सबसे बेहतर है। आरटीपीसीआर जांच करना जरूरी है। मगर राज्य सरकारें इसे गंभीरता से नहीं ले रहीं हैं। देश में बेहतर जांच की सुविधाएं तक हम नहीं जुटा पा रहे हैं, कई राज्य सरकारें इस महामारी से पार पाने के लिए आर्थिक संसाधनों पर्याप्त न होने का रोना रो रही हैं। ऐसे में यह ठीक है कि स्वास्थ्य के मोर्चे पर राज्य सरकारों को ही अगली कतार में लड़ना है, पर उन्हें जरूरी संसाधन और सहयोग उपलब्ध कराने के मामले में केंद्र को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

भारत सहित समूची दुनिया को कोरोना के उपचार की वैक्सीन का सबसे ज्यादा इंतजार है, लेकिन उसके मार्ग में नई-नई बाधाएं आना

अफसोस की बात है, बहुराष्ट्रीय एस्ट्राजेनेका कंपनी से संसार भर के लोग खुशखबरी की उम्मीद लगाए बैठे थे, लेकिन कंपनी ने अपने अंतिम चरण के वैक्सीन परीक्षण को इसलिये रोक दिया है कि परीक्षण में शामिल एक व्यक्ति बीमार पड़ गया। संभव है यदि परीक्षण में शामिल उस व्यक्ति के बीमार पड़ने का कोई अन्य कारण सामने आया, तो फिर वैक्सीन के प्रयोग को आगे बढ़ाया जाएगा। दुनिया भर में अभी 100 ज्यादा जगह कोरोना के वैक्सीन या दवा की तलाश जारी है। कहीं भी कोई कामयाबी या नाकामी सामने आए, तो उसे कम से कम वैज्ञानिकों के बीच साझा करना न केवल यथोचित, बल्कि मानवीयता भी है। आज दुनिया जिस निर्णायक मोड़ पर है, वहां हर देश चीन की तरह गोपनीय एवं मतलबी नहीं हो सकता। चीन वुहान में कोरोना को नियंत्रित करने के बाद स्वयं को महिमामंडित करने में जुटा है, लेकिन उसने दुनिया को यह नहीं बताया कि उसके यहां कोरोना की वास्तविक स्थिति क्या है? आखिर वुहान में सामान्य जन-जीवन की वापसी कैसे हुई? वह दुनिया को बीमारी देने के बाद खुद को कोरोना चिंता से मुक्त और मस्त दिखाने के अमानवीय कृत्य करने में जुटा है, जबकि विशेष रूप से अमेरिका, यूरोप, भारत, ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिक कोरोना वैक्सीन बनाने में दिन-रात एक किए हुए हैं। अभी तक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर दवा विकसित करने में जुटी एस्ट्राजेनेका को सबसे आगे माना जा रहा था, लेकिन अब इंतजार का समय और लंबा हो गया है, लेकिन निराश कतई

नहीं होना चाहिए।

भारत में भी कोरोना मुक्ति की दवा पर प्रयत्न हो रहे हैं, यहां प्लाज्मा थेरेपी को रामबाण माना जा रहा था, दिल्ली, मुंबई और कुछ अन्य शहरों में प्लाज्मा बैंक भी बन गए थे, लेकिन आईसीएमआर ने इस थेरेपी को बहुत कारगर नहीं माना है। देश के 39 अस्पतालों में किए गए अध्ययन से यह बात सामने आई है कि यह थेरेपी सभी में समान रूप से काम नहीं कर रही है। यह थेरेपी करीब 13.6 प्रतिशत लोगों की जान नहीं बचा पाई है, इसलिए इसे पुख्ता नहीं माना जा सकता। इन नतीजों को भी नाकामी नहीं कहा जा सकता, हो सकता है, प्लाज्मा थेरेपी पर भी अलग ढंग से काम करने की जरूरत हो। बहरहाल, वैज्ञानिकों और डॉक्टरों के साथ-साथ सरकारों एवं आम जनता को कतई निराश नहीं होना चाहिए। हम कठिन समय को भी खुशनुमा बना सकते हैं। हम जमीन पर धूल में सने होने के बाद भी खड़े हो सकते हैं। हम वास्तव में जो चाहते हैं, उसे प्राप्त कर खुद को हैरान कर सकते हैं। ये कल्पनाएं सुखद तभी हैं जब हम कोविड-19 के साथ जीते हुए सभी एहतियात का पालन करें, सोशल डिस्टेंसिंग का कड़ाई से पालन करने और सार्वजनिक स्थानों के लिये जब भी निकलें मास्क का प्रयोग जरूरी करें एवं अपना चेहरा ढंके रखें। कुल मिलाकर सर्वश्रेष्ठ इस्तेमाल की स्थिति एवं अधिक से अधिक लंबा खींचने के उपाय से ही हम कोरोना से युद्ध को कम से कम नुकसानदायी बना सकते हैं। आज देश ही नहीं समूची दुनिया पंजों के बल खड़ा कोरोना मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहा है। कब होगा वह सूर्योदय जिस दिन घर के दरवाजों पर कोरोना संक्रमण को रोकने के लिये बंदिशें नहीं लगाने पड़ेंगी?



# कोरोना से नहीं निजी अस्पतालों के बड़े-बड़े बिलों से डर लगता है

—सविता शर्मा

कोरोना महामारी ने भारतीय चिकित्सा क्षेत्र की विसंगतियों एवं दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों की पोल खोल दी है। भले केन्द्र सरकार की जागरूकता एवं जिजीविषा ने जनजीवन में आशा का संचार किया हो, लेकिन इस महाव्याधि से लड़ने में चिकित्सा सुविधा नाकाफी है, धन कमाने एवं लूटखसोट का जरिया बन गयी है। कोरोना के इलाज के लिए निजी अस्पताल में एक दिन का खर्च जहां एक लाख रुपए तक है, वहीं सरकारी अस्पताल में एक दिन भी काटना मुश्किल है। राजधानी दिल्ली सहित महानगरों, नगरों एवं गांवों में चिकित्सा की चरमराई स्थितियों ने निराश किया है। चिकित्सक, अस्पताल, दवाई, संसाधन इत्यादि से जुड़ी कमियां एक-एक कर सामने आ रही हैं। इन त्रासद स्थितियों ने कोरोना पीड़ितों को दोहरे घाव दिये हैं, निराश किया है, उत्पीड़ित किया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इन स्थितियों एवं शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए राजधानी लखनऊ में निजी अस्पतालों की लूट के खिलाफ अभियान चलाया है। लखनऊ के कुछ निजी अस्पतालों में कई मरीजों ने कोरोना इलाज के नाम पर लाखों रुपये की लूट की शिकायत की थी। बताया गया कि उनसे 50 से 80 हजार रुपये नकद जमा कराने के बाद ही इलाज शुरू किया गया। डिस्चार्ज करने के बाद निर्धारित दर से भी अधिक बिल वसूला गया। यह स्थिति केवल उत्तर प्रदेश की नहीं है, समूचे देश में निजी अस्पतालों ने कोरोना इलाज के नाम पर नोट छापने की मशीनें लगा ली है, मनमानी वसूली हो रही है।

सुप्रीम कोर्ट ने भी इन जटिल होती स्थितियों को गंभीरता से लिया है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से कहा है कि उन निजी अस्पतालों की पहचान करे जो कोविड-19 के मरीजों का मुफ्त या कम खर्च में इलाज कर सकते हैं। प्रधान न्यायाधीश एस.ए. बोबडे, न्यायमूर्ति ए.एस. बोपन्ना और न्यायमूर्ति ऋषिकेश राय की पीठ ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये मामले की सुनवाई करते हुए टिप्पणी की कि ऐसे निजी अस्पताल हैं जिन्हें मुफ्त या बेहद कम दामों पर जमीन आवंटित की गयी है, उन्हें कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों का निःशुल्क इलाज करना चाहिए। न्यायालय एक याचिका पर सुनवाई कर रहा था, जिसमें देश के निजी अस्पतालों में कोविड-19 के मरीजों के इलाज के खर्च को नियंत्रित करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। याचिका में कहा गया है कि सरकार को निजी अस्पतालों जिन्हें रियायती दर पर सार्वजनिक भूमि आवंटित की गयी है या जो धर्मार्थ अस्पतालों की श्रेणी में आते हैं, उन्हें कोविड-19 के मरीजों का जनसेवा के रूप में या बगैर किसी नफे नुकसान के आधार पर इलाज करने का आदेश देना चाहिए।

इस याचिका में ऐसे निजी अस्पतालों में कोविड-19 से संक्रमित गरीब, अभावग्रस्त और बगैर किसी स्वास्थ्य बीमा वाले मरीजों तथा सरकार की आयुष्मान भारत जैसी योजना

के दायरे में नहीं आने वाले मरीजों के इलाज का खर्च सरकार को वहन करने का भी निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। याचिका के अनुसार आपदा प्रबंधन कानून के तहत प्रदत्त अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए केंद्र ने जिस तरह निजी अस्पतालों में कोविड-19 के संक्रमित मरीजों की जांच की कीमत को नियंत्रित किया है, ठीक उसी तरह उसे इस महामारी से प्रभावित मरीजों के उपचार पर होने वाले खर्च को भी नियंत्रित करना चाहिए।

कोरोना इलाज की अपेक्षाओं को देखते हुए निजी अस्पतालों को कोरोना के इलाज की मंजूरी दी गई है लेकिन यहां इलाज का खर्च उठा पाना सबके बस की बात नहीं हैं। संजय नगराल ने ट्वीट किया कि एक निजी अस्पताल ने कोरोना से संक्रमित रोगी के इलाज का 12 लाख रुपये का बिल बनाया। इसे देख बीमा कंपनियां सकते में हैं। आखिरकार इस वायरस

कोई संतोषजनक इलाज नहीं है। ये हालात तब हैं, जब प्राइवेट अस्पताल में एक दिन का खर्च नॉर्मल वॉर्ड में 25 से 30 हजार रोजाना से लेकर आईसीयू में 1 लाख रोजाना तक का है। वहीं दिल्ली के सरकारी अस्पतालों में बेड तो हैं लेकिन व्यवस्था छुट्टी पर है। पहले भर्ती करने में आनाकानी, फिर भर्ती करने के बाद सिस्टम फेल। देश के सबसे बड़े सरकारी कोविड-अस्पताल एलएनजेपी के बाहर भी लोग लाचार नजर आ रहे हैं।

कोरोना महामारी का प्रकोप भारत में तेजी से पसर रहा है, हर दिन नब्बे हजार से अधिक रोगी सामने आ रहे हैं। प्रारंभिक दौर में जब एक-दो हजार रोगी सामने आ रहे थे, तब हमारे चिकित्साकर्मियों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए कोरोना पीड़िता का इलाज किया था, अनेक मनोवैज्ञानिक उपक्रम भी हुए, लेकिन अब यह महामारी विकराल रूप धारण कर रही है, तब सरकार भी, चिकित्सा सेवाएं एवं मनोवैज्ञानिक उपचार निस्तेज क्यों हो रहे हैं? प्रश्न केन्द्र सरकार एवं केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री की कोरोना मुक्ति की योजनाओं को लेकर नहीं है। प्रश्न है भारत की चिकित्सा प्रक्रिया की खामियों का, निजी अस्पतालों के महंगे इलाज का, इस अंधेरे का अब तीव्रता से अहसास हो रहा है।

संकट के बढ़ते इस समय में निजी अस्पतालों में आज के भगवान रूपी डॉक्टर एवं अस्पताल मालिक मात्र अपने पेशे के दौरान वसूली व लूटपाट ही करते हुए नजर आए तो यह एक तरह की अराजकता एवं अमानवीयता की पराकाष्ठा है। निजी अस्पतालों एवं उनके डॉक्टरों पर धन वसूलने का नशा इस कदर हावी है कि वह उन्हें सच्चा सेवक के स्थान पर शैतान बना रहा है। केन्द्र सरकार कोरोना पीड़ित को बेहतर तरीके से इस असाध्य बीमारी की चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये प्रतिबद्ध है। निजी अस्पतालों पर कार्रवाई करना बेहद जरूरी है क्योंकि कोरोना के समय में अनेक अस्पतालों ने चिकित्सा-सेवा को मखौल बना दिया है।

एक लोकतांत्रिक देश में लोगों के इलाज एवं निजी अस्पतालों पर अनुशासन स्थापित करने की जिम्मेदारी सरकार की है और वह इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। सरकारी अस्पतालों की पर्याप्त भ्रष्टाचारमुक्त एवं प्रभावी सुविधाएं स्थापित हों, उससे पहले निजी अस्पतालों पर नकेल कसना जरूरी है। वैसे सरकारी इलाज की सबसे अच्छी व्यवस्था ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया में और हांगकांग की तरह हेल्थकेयर का अलग कैंडर बना रखा है। वहां अमीर व्यक्ति भी बीमार होता है तो सबसे पहले सरकारी अस्पताल में जाता है न कि प्राइवेट अस्पताल में। इसके विपरीत भारत आबादी के हिसाब से अस्पतालों में बेड बढ़ाने एवं चिकित्सा सेवाओं को प्रभावी बनाने में बुरी तरह विफल रहा। अब सरकार का ध्यान इस ओर गया है, जब तक उसके परिणाम आये, तब तक कोरोना महामारी के मोर्चे पर सरकारी और निजी क्षेत्र की जुगलबंदी ही देश में कारगर इलाज कर सकती है।

## कोरोना के इलाज में उज्मीद की किरण के रूप में उभरी है स्टेम सेल थेरेपी

—योगेश कुमार शैल

**कुछ भारतीय शोधकर्ता भी ‘स्टेम सेल थेरेपी’ से कोरोना मरीजों के उपचार को लेकर उत्साहित दिख रहे हैं। कई भारतीय डॉक्टरों का मानना है कि शरीर में पाई जाने वाली मिर्जेकाइमल स्टेम सेल्स कोरोना संक्रमित रोगी के क्षतिग्रस्त अंगों को पुनः स्वस्थ कर सकती हैं।**

कोरोना संक्रमण के इलाज के लिए दुनियाभर के देश वैक्सीन बनाने में जुटे हैं। भारत भी इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है लेकिन सम्पूर्ण ट्रायल प्रक्रिया पूरी होने तथा वैक्सीन मरीजों के इलाज के लिए उपलब्ध होने में अभी समय लगेगा। कई देशों में कोरोना के इलाज के लिए कुछ संभावित दवाओं या उपचार पद्धतियों के क्लीनिकल ट्रायल हो रहे हैं और कुछ में शुरूआती सफलता भी मिलती दिख रही है। कुछ देशों में ‘स्टेम सेल थेरेपी’ से भी कोरोना मरीजों का इलाज करने के प्रयास चल रहे हैं। यूएई (संयुक्त अरब अमीरात) में तो इसी उपचार पद्धति से 73 कोरोना वायरस संक्रमितों को ठीक करने की सुखद खबर भी सामने आई थी। वहां के विदेश मंत्रालय के स्ट्रैटेजिक कम्युनिकेशंस विभाग की निदेशक हेंड अल कतीबा के अनुसार ‘अबू धाबी स्टेम सेल सेंटर’ (एडीएससीसी) ने ‘स्टेम सेल थेरेपी’ के जरिये कोरोना के सभी 73 कोरोना मरीजों को ठीक करने में सफलता प्राप्त की।

अल कतीबा के मुताबिक इस रिसर्च सेंटर ने ‘स्टेम सेल थेरेपी’ से कोरोना इलाज की एक नई तकनीक ‘गेम-चेंजर’ विकसित की है, जिससे कोरोना संक्रमण को मात दी जा सकती है। इस नए इलाज में मरीज के रक्त से स्टेम सेल्स को निकाल कर उन्हें फिर से सक्रिय करके रोगी के फेफड़ों में डाला जाता है। इससे फेफड़ों की कोशिकाओं को पुनर्जीवित किया जाता है, जिससे फेफड़ों की क्षमता पुनः बढ़ जाती है। यूएई की विदेश मंत्री हिंद अल ओतैबा के मुताबिक कोरोना महामारी से लड़ने में यह एक अभूतपूर्व कदम साबित हो सकता है। यूएई में जिन 73 मरीजों को यह उपचार दिया गया, उनमें से किसी भी मरीज ने तुरंत किसी साइड इफैक्ट्स की शिकायत नहीं की।

कुछ भारतीय शोधकर्ता भी ‘स्टेम सेल थेरेपी’ से कोरोना मरीजों के उपचार को लेकर उत्साहित दिख रहे हैं। कई भारतीय डॉक्टरों का मानना है कि शरीर में पाई जाने वाली मिर्जेकाइमल स्टेम सेल्स कोरोना संक्रमित रोगी के क्षतिग्रस्त अंगों को पुनः स्वस्थ कर सकती हैं क्योंकि स्टेम सेल्स का कार्य क्षतिग्रस्त टिश्यू की मरम्मत करना और नया टिश्यू बनाना है। भारतीय स्टेम सेल विशेषज्ञों के मुताबिक स्टेम सेल्स को रोगी या किसी स्वस्थ व्यक्ति से लेकर लैब में कल्चर कर एक निश्चित मात्रा में कोरोना संक्रमित व्यक्ति के शरीर में डाला जाए तो मरीज ठीक हो सकता है। ग्रेटर नोएडा के डॉ. मधन जया रमन तथा डॉ. रश्मि जैन सहित देशभर के कुल 8 डॉक्टरों के समूह ‘भारतीय स्टेम सेल स्टडी ग्रुप’ ने ‘स्टेम सेल थेरेपी’ पर शोध करने के बाद दावा किया है कि कोरोना के मरीज स्वयं के स्टेम सेल से ठीक हो सकेंगे। इनका कहना है कि प्लासेंटो, अंबीलिकल कॉर्ड तथा बोन मैरो से निकलने वाले स्टेम सेल से कोरोना मरीज का उपचार किया जा सकता है। स्टेम सेल तीन प्रकार के होते हैं, भ्रूण स्टेम सेल (एंब्रियोनिक स्टेम सेल्स), व्यस्क स्टेम सेल (एडल्ट स्टेम सेल) तथा कॉर्ड स्टेम सेल।

डॉ. मधन का कहना है कि चीन तथा इजराइल में हुए शोधों से पता चला है कि प्लासेंटो (गर्भ में बच्चा जिस झिल्ली में रहता है) तथा अंबीलिकल कॉर्ड (गर्भनाल) से स्टेम सेल निकाल कर कोरोना के मरीजों का उपचार किया जा सकता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि कोरोना संक्रमित मरीज की स्टेम सेल में कोरोना वायरस असर नहीं करता। इसीलिए स्टेम सेल्स ऐसे मरीज के रक्त में पहुंच कर बड़ी तेजी से अपनी तरह की कोशिकाओं को निर्मित कर मरीजों को ठीक कर सकते हैं। चीन में भी कुछ वैज्ञानिक कोरोना संक्रमित मरीजों के शरीर में मिर्जेकाइमल स्टेम सेल्स डाल कर अध्ययन कर चुके हैं। उस दौरान वैज्ञानिकों ने पाया कि कोरोना संक्रमण के कारण जिन मरीजों को निमोनिया हुआ था, वे स्टेम सेल थेरेपी से उपचार के बाद स्वस्थ होने लगे। चीन के वुहान में स्टेम सेल थेरेपी विशेषज्ञ डॉ. डॉन्गचेंग वू ने भी स्टेम सेल ट्रीटमेंट से कोरोना वायरस के सफल इलाज का दावा किया है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने जिस ‘स्टेम सेल’ थेरेपी की खोज की है, वह ऐसी थेरेपी है, जिससे बहुत से लाइलाज माने जाते रहे रोगों का इलाज संभव हो गया है। स्टेम सेल्स को शरीर की अनूठी कोशिकाओं के रूप में जाना जाता है, जिनमें टिश्यू (ऊतक) पुनर्जनन तथा मरम्मत की एक विलक्षण क्षमता होती है क्योंकि ये विशिष्ट सेल प्रकारों में स्वयं-नवीनीकरण तथा विभेद करने में सक्षम हैं। स्टेम सेल थेरेपी में स्टेम कोशिकाओं का उपयोग होता है, जो विभिन्न मूल से संबंधित विभिन्न कोशिकाओं में अंतर करने में सक्षम होती हैं। यह थेरेपी नए स्टेम कोशिकाओं के साथ घायल ऊतकों को बदलने पर केन्द्रित है। शरीर की रोगग्रस्त तथा क्षतिग्रस्त कोशिकाओं का स्थान लेकर स्टेम सेल उनमें नए जीवन का संचार करते हैं। चीनी स्टेम सेल विशेषज्ञ डॉ. डॉन्गचेंग वू के मुताबिक कोरोना के इलाज में स्टेम सेल थेरेपी इसीलिए कारगर है क्योंकि स्टेम सेल शरीर के खराब टिश्यूज की मरम्मत करते हैं। इनकी विशेषता यह होती है कि ये दूसरे टाइप के सेल में बदलकर खराब टिश्यू को ठीक कर सकते हैं।

स्टेम सेल थेरेपी ऐसी विधि है, जो विभिन्न प्रकार के स्टेम सेल का उपयोग कर चोटों तथा अन्य स्वास्थ्य की स्थिति में रोगों की एक विस्तृत श्रृंखला का इलाज करती है। यह थेरेपी मुख्य रूप से स्वास्थ्य और अनिर्दिष्ट स्टेम सेल्स के साथ घायल टिश्यूज को बदलने पर केन्द्रित है। यह ल्यूकेमिया, टिश्यू ग्राफ्ट्स, कैंसर, स्पाइनल कॉर्ड इंजरी, सेरेब्रल पॉल्सी, पार्किंसंस डिजीज, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, विजुअल इम्पेयरमेंट (आंखों की बीमारी), ब्रेन इंजरी, मधुमेह, नर्वस सिस्टम डिसऑर्डर, कार्डियाक मरीज, लकवा, हेपेटाइटिस, डीएनए डैमेज रिपेयर सहित कई असाध्य बीमारियों, चोटों तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी स्थितियों के इलाज के लिए एक आशाजनक तरीका है। इसी स्टेम सेल थेरेपी का उपयोग कोरोना के गंभीर मरीजों के इलाज में किया जा रहा है, जिसके प्रारंभिक नतीजे आशानुकूल रहे हैं। शोधकर्ताओं द्वारा उम्मीद जताई जा रही है कि अगले चरणों में इस थेरेपी के ट्रायल के सुखद नतीजे सामने आएंगे और यह कोरोना मरीजों के लिए कारगर साबित होगी।



(कहानी)

# ज्वालामुखी



डिग्री लेने के बाद मैं नित्य लाइब्रेरी जाया करता। पत्रों या किताबों का अवलोकन करने के लिए नहीं। किताबों को तो मैंने न छूने की कसम खा ली थी। जिस दिन गजट में अपना नाम देखा, उसी दिन मिल और कैंट को उठाकर ताक पर रख दिया। मैं केवल अंग्रेजी पत्रों के 'वांटेड' कालमों को देखा करता। जीवन यात्रा की फिक्र सवार थी। मेरे दादा या परदादा ने किसी अंग्रेज को गदर के दिनों में बचाया होता अथवा किसी इलाके का जमींदार होता, तो कहीं 'नामिनेशन' के लिए उद्योग करता। पर मेरे पास कोई सिफारिश न थी। शोक ! कुत्ते, बिल्लियों और मोटरों की माँग सबको थी। पर बी.ए. पास का कोई पुरसाँहाल न था। महीनों इसी तरह दौड़ते गुजर गये, पर अपनी रुचि के अनुसार कोई जगह नजर न आयी। मुझे अक्सर अपने बी.ए. होने पर क्रोध आता था। झाड़वर, फायरमैन, मिस्त्री, खानसामा या बावर्ची होता, तो मुझे इतने दिनों बेकार न बैठना पड़ता।

एक दिन मैं चारपाई पर लेटा हुआ एक पत्र पढ़ रहा था कि मुझे एक माँग अपनी इच्छा के अनुसार दिखाई दी। किसी रईस को एक ऐसे प्राइवेट सेक्रेटरी की जरूरत थी, जो विद्वान, रसिक, सहृदय और रूपवान हो। वेतन एक हजार मासिक ! मैं उछल पड़ा। कहीं मेरा भाग्य उदय हो जाता और यह पद मुझे मिल जाता, तो जिंदगी चैन से कट जाती। उसी दिन मैंने अपना विनय-पत्र अपने फोटो से साथ रवाना कर दिया, पर अपने आत्मीय-गणों में किसी से इसका जिक्र न किया कि कहीं लोग मेरी हँसी न उड़ाएँ। मेरे लिए 30 रु. मासिक भी बहुत थे। एक हजार कौन देगा ? पर दिल से यह खयाल दूर न होता ! बैठे-बैठे शेखचिल्ली के मन्सूबे बाँधा करता। फिर होश में आकर अपने को समझाता कि मुझमें ऐसे ऊँचे पद के लिए कौन सी योग्यता है। मैं अभी कालेज से निकला हुआ पुस्तकों का पुतला हूँ। दुनिया से बेखबर ! उस पद के लिए एक-से एक विद्वान, अनुभवी पुरुष मुँह फैलाए बैठे होंगे। मेरे लिए कोई आशा नहीं। मैं रूपवान सही, सजीला सही, मगर

ऐसे पदों के लिए केवल रूपवान होना काफी नहीं होता। विज्ञापन में इसकी चर्चा करने से केवल इतना अभिप्राय होगा कि कुरूप आदमी की जरूरत नहीं, और उचित भी है। बल्कि बहुत सजीलापन तो ऊँचे पदों के लिए कुछ शोभा नहीं देता मध्यम श्रेणी, तोंद भरा हुआ शरीर, फूले हुए गाल और गौरव-युक्त वाक्य-शैली यह उच्च पदाधिकारियों के लक्षण हैं और मुझे इनमें से एक भी मयस्सर नहीं। इसी आशा और भय में एक सप्ताह गुजर गया और अब निराश हो गया। मैं भी कैसा ओछा हूँ कि एक बे सिर-पैर की बात के पीछे ऐसा फूल उठा, इसी को लड़कपन कहते हैं। जहाँ तक मेरा खयाल है, किसी दिल्लीबाज ने आजकल के शिक्षित समाज की मूर्खता की परीक्षा करने के लिए यह स्वाँग रचा है। मुझे इतना भी न सूझा। मगर आठवें दिन प्रातःकाल तार के चपरासी ने मुझे आवाज दी। मेरे हृदय में गुदगुदी-सी होने लगी। लपका हुआ आया। तार खोलकर देखा, लिखा-स्वीकार है, शीघ्र आओ। ऐशगढ़।

मगर यह सुख-सम्वाद पाकर मुझे वह आनंद न हुआ, जिसकी आशा थी। मैं कुछ देर तक खड़ा सोचता रहा, किसी तरह विश्वास न आता था। जरूर किसी दिल्लीबाज की शरारत है। मगर कोई मुजायका नहीं, मुझे भी इसका मुँहतोड़ जवाब देना चाहिए। तार दे दूँ कि एक महीने की तनखाह भेज दो। आप ही सारी कलाई खुल जाएगी। मगर फिर विचार किया, कहीं वास्तव में नसीब जगा हो, तो इस उदंडता से बना-बनाया खेल बिगड़ जायगा चलो, दिल्ली ही सही। जीवन में यह घटना भी स्मरणीय रहेगी। तिलस्म को खोल ही डालूँ। यह निश्चय करके तार द्वारा अपने आने की सूचना दे दी और सीधे रेलवे स्टेशन पर पहुँचा। पूछने पर मालूम हुआ कि यह स्थान दक्खिन की ओर है।

टाइमटेबुल में उसका वृत्तांत विस्तार के साथ लिखा था। स्थान अतिरमणीय है, पर जलवायु स्वास्थ्यकर नहीं। हाँ, हष्ट-पुष्ट नवयुवकों पर उसका असर शीघ्र नहीं होता। दृश्य बहुत

मनोरम है, पर जहरीले जानवर बहुत मिलते हैं। यथासाध्य अँधेरी घाटियों में न जाना चाहिए। यह वृत्तांत पढ़कर उत्सुका और भी बढ़ी जहरीले जानवर हैं तो हुआ करें।, कहीं नहीं हैं। मैं अँधेरी घाटियों के पास भूलकर भी न जाऊँगा। आकर सफर का सामान ठीक किया और ईश्वर का नाम लेकर नियत समय पर स्टेशन की तरफ चला, पर अपने आलापी मित्रों से इसका कुछ जिक्र न किया, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि दो-ही-चार दिन में फिर अपना-सा मुँह लेकर लौटना पड़ेगा।

गाड़ी पर बैठा तो शाम हो गई थी। कुछ देर तक सिगार और पत्रों से दिल बहलाता रहा। फिर मालूम नहीं कब नींद आ गई। आँखें खुलीं और खिड़की से बाहर तरफ झाँका तो उषाकाल का मनोहर दृश्य दिखाई दिया। दोनों ओर हरे वृक्षों से ढकी हुई पर्वत-क्षेणियाँ, उन पर चरती हुई उजली-उजली गायें और भेंड़े सूर्य की सुनहरी किरणों में रंगी हुई बहुत सुन्दर मालूम होती थीं। जी चाहता था कि कहीं मेरी कुटिया भी इन्हीं सुखद पहाड़ियों में होती, जंगलों के फल खाता, झरनों का ताजा पानी पीता और आनंद के गीत गाता। यकायक दृश्य बदला कहीं उजले-उजले पक्षी तैरते थे और कहीं छोटी-छोटी डोंगियाँ निर्बल आत्माओं के सदृश्य डगमगाती हुई चली जाती थीं। यह दृश्य भी बदला। पहाड़ियों के दामन में एक गाँव नजर आया, झाड़ियों और वृक्षों से ढका हुआ, मानो शांति और संतोष ने यहाँ अपना निवास-स्थान बनाया हो। कहीं बच्चे खेलते थे, कहीं गाय के बछड़े किलोले करते थे। फिर एक घना जंगल मिला। झुण्ड-के-झुण्ड हिरन दिखाई दिये, जो गाड़ी की हाहाकार सुनते ही चौकड़ियाँ भरते दूर भाग जाते थे। यह सब दृश्य स्वप्न के चित्रों के समान आँखों के सामने आते थे और एक क्षण में गायब हो जाते थे। उनमें एक अवर्णनीय शांतिदायिनी शोभा थी, जिससे हृदय में आकांक्षाओं के आवेग उठने लगते थे।

आखिर ऐशगढ़ निकट आया। मैंने बिस्तर

सँभाला। जरा देर में सिगनल दिखाई दिया। मेरी छाती धड़कने लगी। गाड़ी रुकी। मैंने उतरकर इधर-उधर देखा, कुलियों को पुकारने लगा कि इतने में दो वरदी पहने हुए आदमियों ने आकर मुझे सादर सलाम किया और पूछा- 'आप....से आ रहे हैं न, चलिये मोटर तैयार है।' मेरी बाँछे खिल गई। अब तक कभी मोटर पर बैठने का सौभाग्य न हुआ था। शान के सात जा बैठा। मन में बहुत लज्जित था कि ऐसे फटे हाल क्यों आया ? अगर जानता कि सचमुच सौभाग्य-सूर्य चमका है, तो ठाट-बाट से आता खैर, मोटर चली, दोनों तरफ मौलसरी के सघन वृक्ष थे। सड़क पर लाल वजरी बिछी हुई थी। सड़क हरे-भरे मैदान में किसी सुरम्य जलधार के सदृश बल खाती चली गई थी। दस मिनट भी न गुजरे होंगे कि सामने एक शांतिमय सागर दिखाई दिया। सागर के उस पार पहाड़ी पर एक विशाल भवन बना हुआ था। भवन अभिमान से सिर उठाए हुए था, सागर संतोष से नीचे लेटा हुआ, सारा दृश्य काव्य, शृंगार और अमोद से भरा हुआ था।

हम सदर दरवाजे पर पहुँचे, कई आदमियों ने दौड़कर मेरा स्वागत किया। इनमें एक शौकीन मुंशीजी थे जो बाल सँवारे आँखों में सुर्मा लगाए हुए थे। मेरे लिए जो कमरा सजाया गया था, उसके द्वार पर मुझे पहुंचाकर बोले-सरकार ने फरमाया है, इस समय आप आराम करें, संध्या समय मुलाकात कीजिएगा।

मुझे अब तक इसकी कुछ खबर न थी कि यह 'सरकार' कौन है, न मुझे किसी से पूछने का साहस हुआ क्योंकि अपने स्वामी के नाम तक से अनभिज्ञ होने का परिचय नहीं देना चाहता था। मगर इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरा स्वामी बड़ा सज्जन मनुष्य था। मुझे इतने आदर-सत्कार की कदापि आशा न थी। अपने सुसज्जित कमरे में जाकर जब मैंने एक आराम-कुर्सी पर बैठा, तो हर्ष से विह्वल हो गया। पहाड़ियों की तरफ से शीतल वायु के मंद-मंद झोंके आ रहे थे। सामने छज्जा था। नीचे झील थी। साँप के केंचुल के सदृश

आखिर ऐशगढ़ निकट आया। मैंने बिस्तर सँभाला। जरा देर में सिगनल दिखाई दिया। मेरी छाती धड़कने लगी। गाड़ी रुकी। मैंने उतरकर इधर-उधर देखा, कुलियों को पुकारने लगा कि इतने में दो वरदी पहने हुए आदमियों ने आकर मुझे सादर सलाम किया और पूछा- 'आप....से आ रहे हैं न, चलिये मोटर तैयार है।' मेरी बाँछे खिल गई। अब तक कभी मोटर पर बैठने का सौभाग्य न हुआ था। शान के सात जा बैठा। मन में बहुत लज्जित था कि ऐसे फटे हाल क्यों आया ? अगर जानता कि सचमुच सौभाग्य-सूर्य चमका है, तो ठाट-बाट से आता खैर, मोटर चली, दोनों तरफ मौलसरी के सघन वृक्ष थे। सड़क पर लाल वजरी बिछी हुई थी। सड़क हरे-भरे मैदान में किसी सुरम्य जलधार के सदृश बल खाती चली गई थी। दस मिनट भी न गुजरे होंगे कि सामने एक शांतिमय सागर दिखाई दिया। सागर के उस पार पहाड़ी पर एक विशाल भवन बना हुआ था।



फूल भी सुन्दर है  
और दीपक भी  
सुन्दर है। फूल में  
टंडक और सुगंधि  
है, दीपक में  
प्रकाश और  
उद्दीपन। फूल पर  
भ्रमर उड़-उड़कर  
उसका रस लेता  
है, दीपक में पतंग  
जलकर राख हो  
जाता है। मेरे  
सामने कारचोबी  
मनसद पर जो  
सुन्दरी  
विराजमान थी,  
वह सौंदर्य की एक  
प्रकाशमय ज्वाला  
थी। फूल की  
पंखुड़ियाँ हो सकती  
हैं ज्वाला को  
विभक्त करना  
असम्भव है।  
उसके एक-एक  
अंग की प्रशंसा  
करना ज्वाला को  
काटना है। वह  
नख-शिख एक  
ज्वाला थी, वही  
दीपक, वही चमक  
वही लालिमा, वही  
प्रभा, कोई  
चित्रकार सौन्दर्य  
प्रतिमा का इससे  
इच्छा चित्र नहीं  
खींच सकता था।  
रमणी ने मेरी  
तरफ वात्सल्य  
दृष्टि से देखकर  
कह-आपको  
सफर में कोई  
विशेष कष्ट तो  
नहीं हुआ ?

प्रकाश से पूर्ण, और मैं, जिसे भाग्य देवी ने सदैव अपना सौतेला लड़का समझा था, इस समय जीवन में पहली बार निर्विघ्न आनंद का सुख उठा रहा था।

तीसरे पहर शौकीन मुंशीजी ने आकर इत्तला दी कि सरकार ने याद किया है। मैंने इस बीच में बाल बना लिए थे। तुरन्त अपना सर्वोत्तम सूट पहना और मुंशीजी के साथ सरकार की सेवा में चला। इस, समय मेरे मन में यह शंका उठ रही थी कि मेरी बातचीत से स्वामी असंतुष्ट न हो जायँ और उन्होंने मेरे विषय में जो विचार स्थिर किया हो, उसमें कोई अंतर न पड़ जाय, तथापि मैं अपनी योग्यता का परिचय देने के लिए खूब तैयार था। हम कई बरामदों से होते अंत में सरकार के कमरे के दरवाजे पर पहुँचे। रेशमी परदा पड़ा हुआ था। मुंशीजी ने पर्दा उठाकर मुझे इशारे से बुलाया। मैंने काँपते हुए हृदय से कमरे में कदम रखा और आश्चर्य से चकित रह गया ! मेरे सामने सौंदर्य की एक ज्वाला दीप्तिमान थी।

फूल भी सुन्दर है और दीपक भी सुन्दर है। फूल में टंडक और सुगंधि है, दीपक में प्रकाश और उद्दीपन। फूल पर भ्रमर उड़-उड़कर उसका रस लेता है, दीपक में पतंग जलकर राख हो जाता है। मेरे सामने कारचोबी मनसद पर जो सुन्दरी विराजमान थी, वह सौंदर्य की एक प्रकाशमय ज्वाला थी। फूल की पंखुड़ियाँ हो सकती हैं ज्वाला को विभक्त करना असम्भव है। उसके एक-एक अंग की प्रशंसा करना ज्वाला को काटना है। वह नख-शिख एक ज्वाला थी, वही दीपक, वही चमक वही लालिमा, वही प्रभा, कोई चित्रकार सौन्दर्य प्रतिमा का इससे इच्छा चित्र नहीं खींच सकता था। रमणी ने मेरी तरफ वात्सल्य दृष्टि से देखकर कहा-आपको सफर में कोई विशेष कष्ट तो नहीं हुआ ?

मैंने सँभलकर उत्तर दिया-जी नहीं, कोई कष्ट नहीं हुआ।

रमणी- यह स्थान पसंद आया ?

मैंने साहसपूर्ण उत्साह के साथ जवाब दिया-ऐसा सुन्दर स्थान पृथ्वी पर न होगा। हाँ गाइड-बुक देखने से विदित हुआ कि यहाँ का जलवायु जैसा सुखदप्रकट होता है, यथार्थ में वैसा नहीं, विषैले पशुओं की भी शिकायत है।

यह सुनते ही रमणी का मुख-सूर्य कांतिहीन हो गया। मैंने तो चर्चा इसलिए कर दी थी, जिससे प्रकट हो जाय कि यहाँ आने में मुझे भी कुछ त्याग करना पड़ा है, पर मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इस चर्चा से उसे कोई विशेष दुःख हुआ। पर क्षण-भर में सूर्य-मंडल से बाहर निकल आया, बोली-यह स्थान अपनी रमणीयता के कारण बहुधा लोगों की आँखों में खटकता है। गुण का निरादर करनेवाले सभी जगह होते हैं और यदि जलवायु कुछ हानिकर हो भी, तो आप जैसे बलवान मनुष्य को इसकी क्या चिन्ता हो सकती है। रहे विषैले जीव-जंतु, वह अपने नेत्रों के सामने विचर रहे हैं। अगर मोर, हिरन और हंस विषैले जीव हैं, जो निस्संदेह यहाँ विषैले जीव बहुत हैं।

मुझे संशय हुआ कहीं मेरे कथन से उसका चित्त खिन्न न हो गया हो। गर्व से बोला-इन गाइड-बुकों पर विश्वास करना सर्वथा भूल है।

इस वाक्य से सुंदरी का हृदय खिल गया, बोली-आप स्पष्टवादी मालूम होते हैं और यह मनुष्य का एक उच्च गुण है। मैं आपका चित्र देखते ही इतना समझ गई थी। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि इस पद के लिए मेरे पास एक लाख से अधिक प्रार्थनापत्र आये थे। कितने एम.ए.थे, कोई डी.एस-सी.

था, कोई जर्मनी से पी-एच.डी. उपाधि किए हुए था, मानो यहाँ मुझे किसी दार्शनिक विषय की जाँच करवानी थी मुझे अबकी ही यह अनुभव हुआ कि देश में उच्च-शिक्षित मनुष्यों की इतनी भरमार है। कई महाशयों ने स्वरचित ग्रंथों की नामावली लिखी थी, मानो देश में लेखकों और पंडितों की आवश्यकता है। उन्हें कालगति का लेशमात्र भी परिचय नहीं है। प्राचीन धर्म-कथाएँ अब केवल अंधभक्तों के रसास्वादन के लिए ही हैं, उनसे और कोई लाभ नहीं है। यह भौतिक उन्नति का समय है। आजकल लोग भौतिक सुख पर अपने प्राण अर्पण कर देते हैं। कितने ही लोगों ने अपने चित्र भी भेजे थे। कैसी-कैसी विचित्र मूर्तियाँ थीं, जिन्हें देख कर घंटों हँसिए। मैंने उन सभी को एक अलबम में लगा लिया है और अवकाश मिलने पर जब हँसने की इच्छा होती है, तो उन्हें देखा करती हूँ। मैं उस विद्या को रोग समझती हूँ जो मनुष्य को बनमानुष बना दे। आपका चित्र देखते ही आँखें मुग्ध हो गईं। तत्क्षण आपको बुलाने को तार दे दिया।

मालूम नहीं क्यों, अपने गुण-स्वभाव की प्रशंसा की अपेक्षा हम अपने बाह्य गुणों की प्रशंसा से अधिक संतुष्ट होते हैं और एक सुंदरी के मुख से तो वह चलते हुए जादू के समान है। बोला-यथासाध्य आपको मुझसे असंतुष्ट होने का अवसर न मिलेगा।



सुन्दरी ने मेरी ओर प्रशंसापूर्ण नेत्रों से देखकर कहा-इसका मुझे पहले ही से विश्वास है। आइए, अब कुछ काम की बातें हो जायँ। इस घर को आप अपना ही समझिए और संकोच छोड़कर आनन्द से रहिए। मेरे भक्तों की संख्या बहुत है। वह संसार के प्रत्येक भाग में उपस्थित हैं और बहुधा मुझसे अनेक प्रकार की जिज्ञासा किया करते हैं। उन सबकों मैं आपके सुपुर्द करती हूँ। आपको उनमें भिन्न-भिन्न स्वभाव के मनुष्य मिलेंगे। कोई मुझसे सहायता माँगता है, कोई मेरी निन्दा करता है, कोई सराहता है, कोई गालियाँ देता है। इन सब प्राणियों को संतुष्ट करना आपका काम है। देखिए, आज के पत्रों का ढेर है। एक महाशय कहते हैं-‘बहुत दिन हुए आपकी प्रेरणा से मैं अपने बड़े भाई की मृत्यु के बाद उनकी सम्पत्ति का अधिकारी बन बैठा था। अब उनका पुत्र वयस प्राप्त कर चुका है और मुझसे अपने पिता की जायदाद लौटाना चाहता है। इतने दिनों तक उस सम्पत्ति का उपभोग करने के पश्चात् अब उसका हाथ से निकलना अखर रहा है, आपकी इस विषय में क्या सहमति है ?’ इनको उत्तर दीजिए कि इस समय कूटनीति से काम लो, अपने भतीजे को कपट प्रेम से मिला लो। और जब वह निःशंक हो जाए तो उससे एक सादे स्टाम्प पर हस्ताक्षर करा लो। इसके पीछे पटवारी और अन्य कर्मचारियों की मदद से इसी स्टाम्प पर जायदाद का बैनामा लिखा लो। यदि एक लगाकर दो मिलते हों, तो आगा-पीछा मत करो।

यह उत्तर सुनकर मुझे बड़ा कौतूहल हुआ। नीति-ज्ञान को धक्का-सा लगा। सोचने लगा, यह रमणी कौन है और क्यों ऐसे अनर्थ का परामर्श देती है। ऐसे खुलम्बुल्ला तो कोई वकील भी किसी को यह राय न देगा। उसकी

ओर संदेहात्मक भाव से देखकर बोला-यह तो सर्वथा न्यायविरुद्ध प्रतीत होता है।

कामिनी खिलखिलाकर हँस पड़ी और बोली-न्याय की आपने भली कही। यह केवल धर्मान्ध मनुष्यों के मन का समझौता है, संसार में इसका अस्तित्व नहीं। बाप ऋणा ले कर मर जाए, लड़का कौड़ी-कौड़ी भरे। विद्वान लोग इसे न्याय कहते हैं, मैं इसे घोर अत्याचार समझती हूँ। इस न्याय के परदे में गाँठ के पूरे महाजन की हेकड़ी साफ झलक रही है। एक डाकू किसी भद्र पुरुष के घर में डाका मारता है, लोग उसे पकड़कर कैद कर देते हैं, धर्मात्मा लोग इसे भी न्याय कहते हैं, किन्तु यहाँ भी वही धन और अधिकार की प्रचंडता है। भद्र पुरुष ने कितने ही घरों को लूटा, कितनों ही का गला दबाया और इस प्रकार धन-संचय किया, किसी को भी उन्हें आँख दिखाने का साहस न हुआ। डाकू ने जब उनका गला दबाया, तो वह अपने धन और प्रभुत्व के बस से उस पर वज्रप्रहार कर बैठे। इसे न्याय नहीं कहते। संसार में धन, छल, कपट धूर्तता का राज्य है यही जीवन-संग्राम है। यहाँ प्रत्येक साधन, जिससे हमारा काम निकले, जिससे हम अपने शत्रुओं पर विजय पा सकें न्यायनुकूल और उचित है। धर्म-युद्ध के दिन अब नहीं रहे। यह देखिए, यह एक दूसरे सज्जन का पत्र है। वह कहते हैं-‘मैंने प्रथम श्रेणी में एम.ए. पास किया, प्रथम श्रेणी में कानून की परीक्षा पास की, पर

जिधर देखता था, ऐश्वर्य ही का आडम्बर दिखाई देता था। मेरे आश्चर्य की सीमा न थी, मानो किसी तिलिस्म में फँसा हूँ। इन जिज्ञासाओं का इस रमणी से क्या सम्बन्ध है यह भेद भी न खुलता था। मुझे नित्य उससे साक्षात् होता था, उसके सम्मुख आते ही मैं अचेत-सा हो जाता था, उसकी चितवनों में एक आकर्षण था, जो मेरे प्राणों को खींच लिया करता था। मैं वाक्य-शून्य हो जाता, केवल छिपी हुई आँखों से उसे देखा करता था। पर मुझे उसकी मृदुल मुस्कान और रसमयी आलोचनाओं तथा मधुर, काव्यमय भावों में प्रेमानंद की जगह एक प्रबल मानसिक अशांति का अनुभव होता था। उसकी चितवनों केवल हृदय को बाणों के समान छेदती थीं, उसके कटाक्ष चित्त को व्यस्त करते थे। शिकारी अपने शिकार को खिलाने में जो आनंद पाता है, वही उस परम सुंदरी को मेरी प्रेमातुरता में प्राप्त होता था। वह एक सौंदर्य ज्वाला थी जलाने के सिवाय और क्या कर सकती है ? तिस, पर मैं पतंग की भाँति उस ज्वाला पर अपने को समर्पण करना चाहता था। यही आकांक्षा होती कि उन पदकमलों पर सिर रखकर प्राण दे दूँ। यह केवल उपासक की भक्ति थी, काम और वासनाओं से शून्य।

कभी-कभी वह संध्या के समय अपने मोटर-वोट पर बैठकर सागर की सैर करती तो ऐसा जान पड़ता, मानो चंद्रमा आकाश-लालिमा में तैर रहा है। मुझे इस दृश्य में सुख प्राप्त होता था।

मुझे अब अपने नियत कार्यों में खूब अभ्यास हो गया था मेरे पास प्रतिदिन पत्रों का पोथा पहुँच जाता था। मालूम नहीं, किस डाक से आता था। लिफाफों पर कोई मोहर न होती थी। मुझे इन जिज्ञासुओं में बहुधा वह लोग मिलते थे, जिनका मेरी दृष्टि में बड़ा आदर था; कितने ही ऐसे महात्मा थे, जिनमें मुझे श्रद्धा थी। बड़े-बड़े विद्वान लेखक और अध्यापक, बड़े-बड़े ऐश्वर्यवान रईस, यहाँ तक कि कितने ही धर्म के आचार्य, नित्य अपनी रामकहानी सुनाते थे।

उनकी दशा अत्यंत करुणाजनक थी। वह सबके-सब मुझे रँग हुए सियार दिखाई देते थे। जिन लेखकों को मैं अपनी भाषा का स्तम्भ समझता था, उनसे घृणा होने लगी। वह केवल उच्छेक थे, जिनकी सारी कीर्ति चोरी, अनुवाद और कतर-ब्योंत पर निर्भर थी। जिन धर्म के आचार्यों को मैं पूज्य समझता था, वह स्वाध, तृष्णा और घोर नीचता के दलदल में फँसे हुए दिखाई देते थे। मुझे धीरे-धीरे यह अनुभव हो रहा था कि संसार की उत्पत्ति से अब तक, लाखों शताब्दियाँ बीत जाने पर भी मनुष्य वैसा ही क्रूर, वैसा ही वासनाओं का गुलाम बना हुआ है। बल्कि उस समय के लोग सरल प्रकृति के कारण इतने कुटिल, दुराग्रहों में इतने चालाक न होते थे।

एक दिन संध्या समय उस रमणी ने मुझे बुलाया। मैं अपने घमंड में यह समझता था कि मेरे बाँकपन का कुछ-न-कुछ असर उस पर भी होता है। अपना सर्वोत्तम सूट पहना, बालसँवारे और विरक्त भाव से जाकर बैठ गया। यदि वह मुझे अपना शिकार बनाकर खेलती थी, तो मैं भी शिकार बनकर उसे खिलाना चाहता था।

ज्यों ही मैं पहुँचा, उस लावण्यमयी ने मुस्कराकर मेरा स्वागत किया, पर मुख-चंद्र कुछ मलिन था। मैंने अधीर होकर पूछा-सरकार का जी तो अच्छा है ?

उसने निराश भाव से उत्तर दिया -जी हाँ, एक महीने से एक कठिन रोग में फँस गई हूँ। अब तक किसी भाँति अपने को सँभाल सकी हूँ, पर अब रोग असाध्य होता जाता है। उसकी औषधि निर्दय मनुष्य के पास है।



पृष्ठ ९ का शेष...ज्वालामुखी.....

वह मुझे प्रतिदिन तड़पते देखता है, पर उसका पाषाण-हृदय जरा भी नहीं पसीजता।

मैं इशारा समझ गया। सारे शरीर में एक बिजली-सी दौड़ गई। साँस बड़े वेग से चलने लगी। एक उन्मत्तता का अनुभव होने लगा। निर्भय होकर बोला-सम्भव है, जिसे आपने निर्दय समझ रखा हो वह भी आपको ऐसा ही समझता हो और भय से मुँह खोलने का साहस न कर सकता हो।

सुंदरी ने कहा-तो कोई ऐसा उपाय बताइए, जिससे दोनों ओर की आग बुझे। प्रियतम! अब मैं अपने हृदय की दहकती हुई विरहाग्नि को नहीं छिपा सकती। मेरा सर्वस्व आपको भेंट है। मेरे पास वह खजाने हैं, जो कभी खाली न होंगे, मेरे पास वह साधन हैं, जो आपको कीर्ति के शिखर पर पहुँचा देंगे। मैं समस्त संसार को आपके पैरों पर झुका सकती हूँ। बड़े-बड़े सम्राट भी मेरी आज्ञा को नहीं टाल सकते। मेरे पास वह मंत्र है, जिससे मैं मनुष्य के मनोवेगों को क्षण-मात्र में पलट सकती हूँ, आइए, मेरे हृदय से लिपटकर इस दाह-क्रांति को शांत कीजिए।

रमणी के चेहरे पर जलती हुई आग की-सी कांति थी। वह दोनों हाथ फैलाए कामोन्मत्त होकर मेरी ओर बढ़ी। उसकी आँखों से आग की चिंगारियाँ निकल रही थीं। परंतु जिस प्रकार अग्नि से पारा दूर भागता है उसी प्रकार मैं भी उसके सामने से एक कदम पीछे हट गया। उसकी प्रेमातुरता से मैं भयभीत हो गया, जैसे कोई निर्धन मनुष्य किसी के हाथों से सोने की ईंट लेते हुए भयभीत हो जाए। मेरा चित्त एक अज्ञात आशंका से काँप उठा। रमणी ने मेरी ओर अग्निमय नेत्रों से देखा, मानो किसी सिंहनी के मुँह से उसका आहार छिन जाए और सरोष होकर बोली- यह भीरुता क्यों ?

मैं- मैं आपका तुच्छ सेवक हूँ, इस महान् आदर का पात्र नहीं।

रमणी- आप मुझसे घृणा करते हैं ?  
मैं- यह आपका मेरे साथ अन्याय है। मैं इस योग्य भी तो नहीं कि आपके तलुओं को आँखों से लगाऊँ। आप दीपक हैं, मैं पतंग हूँ, मेरे लिए इतना ही बहुत है।

रमणी नैराश्यपूर्ण क्रोध के साथ बैठ गई और बोली-वास्तव आप निर्दयी हैं, मैं ऐसा न समझती थी। आपमें अभी तक अपनी शिक्षा के कुसंस्कार लिपटे हुए हैं, पुस्तकों और सदाचार की बेड़ी आपके पैरों से नहीं निकलीं।

मैं शीघ्र ही अपने कमरे में चला आया और चित्त के स्थिर होने पर जब मैं इस घटना पर विचार करने लगा, तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि अग्निकुंड में गिरते गिरते बचा। कोई गुप्त शक्ति मेरी सहायक हो गई। यह गुप्त शक्ति क्या थी ?

मैं जिस कमरे में ठहरा हुआ था, उसके सामने झील के दूसरी तरफ छोटा-सा झोपड़ा था। उसमें एक वृद्ध पुरुष रहा करते थे। उनकी कमर तो झुक गई थी; पर चेहरा तेजमय था। वह कभी-कभी इस महल में आया करते थे। रमणी न जाने क्यों उनसे घृणा करती थी, मन में उनसे डरती थी। उन्हें देखते ही घबरा जाती मानो किसी असमंजस में पड़ी हुई है। उसका मुख फीका पड़ जाता, जाकर अपने किसी गुप्त स्थान में मुँह छिपा लेती। मुझे उसकी यह दशा देखकर कौतूहल होता था। कई बार उसने मुझसे भी उनकी चर्चा की थी, पर अत्यंत अपमान के भाव से। वह मुझे

उनसे दूर-दूर रहने का उपदेश दिया करती थी, और यदि कभी मुझे उनसे बातें करते देख लेती, तो उसके माथे पर बल पड़ जाते थे। कई दिनों तक मुझसे खुलकर न बोलती थी।

उस रात को मुझे देर तक नींद नहीं आयी। उधेड़बुन में पड़ा हुआ था। कभीजी चाहता, आओ आँख बंद करके प्रेम-रस का पान करें, संसार के पदार्थों का सुख भोगें, जो कुछ होगा, देखा जाएगा।

जीवन में ऐसे दिव्य अवसर कहाँ मिलते हैं ? फिर आप-ही-आप मन खिंच जाता था, घृणा उत्पन्न हो जाती थी।

रात के दस बजे होंगे कि हठात् मेरे कमरे का द्वार आप-ही-आप खुल गया और वही तेजस्वी पुरुष अंदर आये। यद्यपि मैं अपनी स्वामिनी के भय से उनसे बहुत कम मिलता था, पर उनके मुख पर ऐसी शांति थी और उनके भाव ऐसे पवित्र तथा कोमल थे कि हृदय में उनके सत्संग की उत्कंठा होती थी। मैंने उनका स्वागत किया और लाकर एक कुरसी पर बैठा दिया। उन्होंने मेरी ओर दयापूर्ण भाव से देखकर कहा-मेरे आने से तुम्हें कष्ट तो नहीं हुआ ?



मैंने सिर झुकाकर उत्तर दिया-आप-जैसे महात्माओं का दर्शन मेरे सौभाग्य की बात है।

महात्माजी निश्चिंत होकर बोले-अच्छ, तो सुनो और सचेत हो जाओ, मैं तुम्हें यह चेतावनी देने के लिए आया हूँ। तुम्हारे ऊपर एक घोर विपत्ति आने वाली है। तुम्हारे लिए इस समय इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है कि यहाँ से चले जाओ। यदि मेरी बात न मानोगे तो जीवन पर्यन्त कष्ट भोगोगे और इस मयाजाल से कभी मुक्त न हो सकोगे। मेरा झोपड़ा तुम्हारे समाने था, मैं भी कभी-कभी यहाँ आया करता था, पर तुमने मुझसे मिलने की आवश्यकता न समझी। यदि पहले ही दिन तुम मुझसे मिलते, तो सहस्रों मनुष्यों का सर्वनाश करने के अपराध से बच जाते। निस्संदेह तुम्हारे कर्मों का फल है, जिसने आज तुम्हारी रक्षा की। अगर यह पिशाचिनी एक बार तुमसे प्रेमालिंगन कर लेती, तो फिर तुम कहीं के नहीं रहते। तुम उसी दम उसके अजायबखाने में भेज दिये जाते। वह जिस पर रीझती है, उसकी यही गत बनाती है। यही उसका प्रेम है। चलो, इस अजायब घर की सैर करो, तब तुम समझोगे कि आज किस आफत से बचे।

यह कहकर महात्माजी ने दीवार में एक बटन दबाया। तुरंत एक दरवाजा निकल आया। यह नीचे उतरने की सीढ़ी थी। महात्मा उसमें घुसे और मुझे भी बुलाया। घोर अंधकार में कई कदम उतरने के बाद एक बड़ा कमरा नजर आया। उसमें एक दीपक टिमटिमा रहा था। वहाँ मैंने जो घोर, वीभत्स और हृदयविदारक दृश्य देखे, उसका स्मरण करके आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इटली के अमर कवि 'डैण्टी' नामिनेशन' के लिए उद्योग करता ने नरक का जो दृश्य दिखाया है, उससे

कहीं भयावह, रोमांचकारी तथा नारकीय दृश्य मेरी आँखों के सामने उपस्थित था; सैकड़ों विचित्र देहधारी नाना प्रकार की अशुद्धियों में लिपटे हुए, भूमि पर पड़े कराह रहे थे। उनके शरीर मनुष्यों के से थे, लेकिन चेहरों का रूपांतर हो गया था। कोई कुत्ते से मिलता था, कोई गीदड़ से, कोई बनबिलाव से, कोई साँप से। एक स्थान पर एक मोटा, स्थूल मनुष्य एक दुर्बल, शक्तिहीन मनुष्य के गले में मुँह लगाए उसका रक्त चूस रहा था। एक ओर दो गिद्ध की सूरतवाले मनुष्य एक सड़ी हुई लाश पर बैठे उसका मांस नोच रहे थे। एक जगह एक अजगर की सूरत का मनुष्य एक बालक को निगलना चाहता था, पर बालक उसके गले में लटका हुआ था। दोनों ही जमीन पर पड़े छटपटा रहे थे। एक जगह मैंने अत्यंत पैशाचिक घटना देखी। दो नागिन की सूरत वाली स्त्रियाँ एक भेड़िये की सूरतवाले मनुष्य के गले में लिपटी हुई उसे काट रही थीं। वह मनुष्य घोर वेदना से चिल्ला रहा था। मुझसे अब और न देखा गया। तुरंत वहाँ से भागा और गिरता-पड़ता अपने कमरे में आकर दम लिया।

महात्माजी भी मेरे साथ चले आये। जब मेरा चित्त शांत हुआ तो उन्होंने कहा-तुम इतनी जल्दी घबरा गए, अभी तो इस रहस्य का एक भाग भी नहीं देखा। यह तुम्हारी स्वामिनी के बिहार का स्थान है और यही उसके पालतू जीव हैं। इन जीवों के पिशाचाभिनय देखने में उसका विशेष मनोरंजन होता है। यह सभी मनुष्य किसी समय तुम्हारे ही समान प्रेम और प्रमोद के पात्र थे, पर उनकी यह दुर्गति हो रही है। अब तुम्हें मैं

यही सलाह देता हूँ कि इसी दम यहाँ से भागों, नहीं तो रमणी के दूसरे वार से कदापि न बचोगे।

यह कहकर महात्मा अदृश्य हो गए। मैंने भी अपनी गठरी बाँधी और अर्धरात्रि के सन्नाटे में चोरों की भाँति कमरे से बाहर निकला। शीतल आनंदमय समीर चल रहा था, सामने के सागर में तारे छिटक रहे थे, मेहंदी की सुगंधि उड़ रही थी। मैं चलने को तो चला, पर संसार-सुख-भोग का ऐसा सुअवसर छोड़ते हुए दुःख होता था। इतना देखने और महात्मा के उपदेश सुनने पर भी चित्त उस रमणी की ओर खिंचता था। मैं कई बार चला, कई बार लौटा, पर अंत में आत्मा ने इंद्रियों पर विजय पायी। मैंने सीधा मार्ग छोड़ दिया और झील किनारे-किनारे गिरता-पड़ा, कीचड़ में फँसता हुआ सड़क तक आ पहुँचा। यहाँ आकर मुझे एक विचित्र उल्लास हुआ, मानो कोई चिड़िया बाज के चंगुल से छूट गई हो।

यद्यपि मैं एक मास के बाद लौटा था, पर अब जो देखा, तो अपनी चारपाई पर पड़ा हुआ था। कमरे में जरा भी गर्द या धूल न थी। मैंने लोगों से इस घटना की चर्चा की, तो लोग खूब हँसे और मित्रगण तो अभी तक मुझे 'प्राइवेट सेक्रेटरी' नामिनेशन' के लिए उद्योग करता कहकर बनाया करते हैं। सभी कहते हैं कि मैं एक मिनट के लिए भी कमरे से बाहर नहीं निकला, महीने-भर गायब रहने की तो बात ही क्या? इसलिए अब मुझे भी विवश होकर यही कहना पड़ता है कि शायद मैंने कोई स्वप्न देखा है। कुछ-भी हो, परमात्मा को कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूँ कि मैं उस पापकुंड से बचकर निकल आया। वह चाहे स्वप्न ही हो, पर मैं उसे अपने जीवन का एक वास्तविक अनुभव समझता हूँ, क्योंकि उसने सदैव के लिए मेरी आँखें खोल दीं।

## अध्यात्म

# बुद्ध के जीवन की एक घटना

बुद्ध को किसी ने गालियां दीं और बुद्ध ने कहा, तेरी बात पूरी हो गयी हो तो मैं जाऊं, मुझे दूसरे गांव पहुंचना है। उस आदमी ने कहा, हम गालियां दे रहे हैं, यह कोई बात नहीं है!

बुद्ध ने कहा, मेरे लिए बात ही है, तुम्हारे लिए गाली होगी। दस साल पहले आना था। तब मेरे लिए भी गाली थी। तब मैं ऐसा पागल था कि दूसरों की भूलों के लिए अपने को दंड देता था। तब मैं ऐसा पागल था। दूसरों की भूलों के लिए अपने को दंड देता था--गाली तुम देते, दुख मैं पाता था। अब गाली तुम दे रहे हो, तुम्हीं जानो। अपना कुछ लेना-देना नहीं; हम इस बीच पड़ते ही नहीं। तुमने दी, तुम समझो। पिछले गांव में कुछ लोग मिठाइयां लाए थे। मेरा पेट भरा था, मैंने कहा, ले जाओ। क्या किया होगा उन्होंने?

उस गाली देने वाले आदमी ने भी कहा, क्या किया होगा, गांव में जाकर बांट दिया होगा। घर में खा लिया होगा, प्रसाद समझा होगा।

तुम भी अपनी गालियां ले जाओ। गांव में बांट देना, घर में खा लेना, प्रसाद समझ लेना। मेरा पेट भर चुका। दस साल पहले भर चुका। तुम जरा देर करके आए, मित्र! अब किसी और के अपराधों के लिए मैं अपने को दंड नहीं देता। अब मैं अपना शत्रु नहीं हूँ।

तुमने कभी गौर किया! कोई आदमी गाली देता है, तुम क्यों क्रोधित हो रहे हो? क्रोध से तो तुम जलोगे, यह आग तो तुम्हारे भीतर उठेगी, यह तो तुम्हारे जीवन में घाव बनाएगी। तुम कहते हो, इसने गाली दी। माना। तुमने ली क्यों? देने तक बात थी, खतम थी बात। लिए बिना तो कोई दे नहीं सकता। जो जागा हुआ है, वह लेता नहीं है। वह कहता है, बड़ी कृपा, तुमने दी, अब ले जाओ वापस, हम लेते नहीं। तुमने खयाल किया, गाली तुम्हारे लेने पर निर्भर है, दूसरे के देने पर नहीं। देने वाला लाख सिर पटके, तुम न लोगे तो क्या करेगा? थकेगा, परेशान होगा। शायद जागकर लौटे।

वह आदमी बुद्ध को देखकर समझा होगा, सोचा होगा उसने, यह तो किसी नए ही ढंग की चेतना से मिलना हो गया। बुद्ध ने उसे चौंका दिया। वह रातभर सो न सका होगा। उसकी गाली उस पर ही लौटती रही होगी। वह करवटें बदलता रहा होगा। कहते हैं, सुबह वह भागा हुआ आया था क्षमा मांगने। बुद्ध ने कहा, छोड़ भी, जो हमने ली नहीं, उसके लिए हम क्षमा कैसे दें! तू ही जान, तेरा ही काम।

यह सब तेरा ही हिसाब है। एकालाप, मोनोलाग। यह डायलाग नहीं है। दूसरा बोला ही नहीं, हम कुछ बोले ही नहीं, हम कुछ कहे ही नहीं।

तुमने एकालाप देखा? कुछ कलाकार होते हैं, जो एकालाप करते हैं। वे सभी पात्रों का अभिनय अकेले कर देते हैं। तांगे वाले भी वही हैं, तांगे पर बैठने वाले भी वही हैं, रास्ते पर चलने वाले भी वही हैं। तांगे वाले की तरफ से भी आवाजें मारते हैं, घोड़े को हांकते हैं, ग्राहक की तरफ से भी आवाज देते हैं, रास्ते पर चलते लोगों का भी शोरगुल करते हैं। एक ही आदमी सब काम कर लेता है, पर्दे की आड़ में।

तुमने सब काम किए। तुम ही करने वाले हो, और तुम्हीं पर सब हुआ। एकालाप है तुम्हारा जीवन। संवाद नहीं है इसमें।

इसीलिए तो रोज-रोज ऐसा होता है, तुम पत्नी से कुछ कहते हो, पत्नी कुछ और अर्थ ले लेती है। तुम लाख सिर पटको, तुम कहो, यह मेरा मतलब न था। पत्नी कहती है, यही तुम्हारा मतलब था। तुम खुद ही कह रहे हो यह मेरा मतलब न था, लेकिन पत्नी फिर भी नहीं सुनती। वह कहती है, यही तुम्हारा मतलब था। एकालाप चल रहा है। इस एकालाप के बाहर आओ। मौन बनो।

जैसे कोई लता घेर ले वृक्ष को, इसी भांति दुराचार जैसे घेरकर फैला हुआ है।

‘वह अपने प्रति ठीक वैसा ही करता है जैसा उसके शत्रु चाहते हैं।’

तुम अपने शत्रुओं के हाथ में खेल रहे हो। यह कैसा षडयंत्र तुमने किया है? तुम अपने ही मित्र नहीं। मेरे देखे, तुम अगर प्रसन्न होना चाहो तो कोई तुम्हारी प्रसन्नता में बाधा नहीं डाल सकता। हां, अगर तुम दुखी होना चाहो, तब भी कोई बाधा नहीं डाल सकता। मगर यह सत्य इतना कठिन है, इसे स्वीकार करने में मन झिझकता है। यह कहता है, मैं खुद ही दुख दे रहा हूँ? कभी नहीं। दूसरे दुख दे रहे हैं। जब तुम कहते हो, दूसरे दुख दे रहे हैं, तभी तुम मोहताज हुए, तभी तुम भिखारी बने। अब दूसरे ही सुख देंगे, तो मिलेगा।

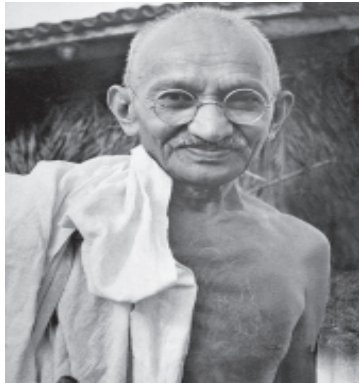
इसे तुम समझो। इस गणित के पीछे उतरो। अगर तुमने कहा, दूसरे दुख दे रहे हैं, तो इसका अर्थ हुआ, जब दूसरे सुख देंगे, तभी। तो तुम तो भिखारी हो गए। जो दूसरे देंगे, वही। तुम मालिक न रहे।

बुद्ध चाहते हैं तुम मालिक बनो, स्वामित्व की घोषणा करो। तुम कहो, मैं अपने को सुख देता, मैं अपने को दुख देता, जो मेरी मर्जी वही मैं करता हूँ। तुम दूसरे से अपने को मुक्त कर लो।

तुम अगर इसे थोड़ा भी प्रयोग करके देखो, तुम हंसोगे। इस बात पर हंसोगे कि अब तक इस सीधी सी सरल बात को समझा क्यों न? पत्नी कुछ कहे चली जा रही है, तुम हंसते ही रहो। तुम कहो कि हमने हंसने का ही तय किया है, हम प्रसन्न ही रहना चाहते हैं। तुझे जो करना हो तू कर, यह तेरा मन, तेरी मर्जी। तुझे दुखी होना हो दुखी हो, बाकी हम तय करके आए कि आज सुखी ही रहेंगे। तुम जरा देखो कि तुम्हारे निर्णय के साथ ही सुख की एक धारा बहने लगती है। तुम चकित होकर पाओगे कि तुम जैसे उपद्रव के बाहर खड़े हो।



## गांधीजी की स्पष्टवादिता और सत्यनिष्ठा



राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की ईमानदारी, स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा और शिष्टता के कई किस्से प्रचलित हैं, जिनसे उनके महान व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक मिलती है। एक बार महात्मा गांधी श्रीमती सरोजिनी नायडू के साथ बैडमिंटन खेल रहे थे। श्रीमती नायडू के दाएं हाथ में चोट लगी थी। यह देखकर गांधी जी ने भी अपने बाएं हाथ में ही रैकेट पकड़ लिया। श्रीमती नायडू का ध्यान जब इस ओर गया तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और कहने लगी, 'आपको तो यह भी नहीं पता कि रैकेट कौन से हाथ में पकड़ा जाता है?'

इस पर बापू ने जवाब दिया, 'आपने भी तो अपने दाएं हाथ में चोट लगी होने के कारण बाएं हाथ में रैकेट पकड़ा हुआ है और मैं किसी की भी मजबूरी का फायदा नहीं उठाना चाहता। अगर आप मजबूरी के कारण दाएं हाथ से रैकेट पकड़कर नहीं खेल सकती तो मैं अपने दाएं हाथ का फायदा क्यों उठाऊँ?' गांधी जी एक बार चंपारण से बतिया रेलगाड़ी में सफर कर रहे थे। गाड़ी में अधिक भीड़ न होने के कारण वे तीसरे दब्बे के डिब्बे में जाकर एक बर्थ पर लेट गए। अगले स्टेशन पर जब रेलगाड़ी रुकी तो एक किसान उस डिब्बे में चढ़ा। उसने बर्थ पर लेटे हुए गांधी जी को अपशब्द बोलते हुए कहा, 'यहां से खड़े हो जाओ। बर्थ पर ऐसे पसरे पड़े हो, जैसे यह रेलगाड़ी तुम्हारे बाप की है।'

गांधी जी किसान को बिना कुछ कहे चुपचाप उठकर एक ओर बैठ गए। तभी किसान बर्थ पर आराम से बैठते हुए मस्ती में गाने लगा, 'धन-धन गांधी जी महाराज! दुखियों का दुख मिटाने वाले गांधी जी..।' रोचक बात यह थी कि वह किसान कहीं और नहीं बल्कि बतिया में गांधी जी के दर्शनों के लिए ही जा रहा था लेकिन इससे पहले उसने गांधी जी को कभी देखा नहीं था, इसलिए रेलगाड़ी में उन्हें पहचान न सका। बतिया पहुंचने पर स्टेशन पर जब हजारों लोगों की भीड़ ने गांधी जी का स्वागत किया, तब उस किसान को वास्तविकता का अहसास हुआ और शर्म के मारे उसकी नजरें झुक गईं। वह गांधी जी के चरणों में गिरकर उनसे क्षमायाचना करने लगा। गांधी जी ने उसे उठाकर प्रेमपूर्वक अपने गले से लगा लिया। बात उन दिनों की है, जब गांधी जी सश्रम कारावास की सजा भुगत रहे थे। एक दिन जब उनके हिस्से का सारा काम समाप्त हो गया तो वे खाली समय में एक ओर बैठकर एक पुस्तक पढ़ने लगे। तभी जेल का एक संतरी दौड़ा-दौड़ा उनके पास आया और उनसे कहने लगा कि जेलर साहब जेल का मुआयना करने इसी ओर आ रहे हैं, इसलिए वो उनको दिखाने के लिए कुछ न कुछ काम करते रहें लेकिन गांधी जी ने ऐसा करने से साफ इंकार कर दिया और कहा कि इससे तो बेहतर होगा कि मुझे ऐसे स्थान पर काम करने के लिए भेजा जाए, जहां काम इतना अधिक काम हो कि उसे समय से पहले पूरा किया ही न जा सके।

सिनेमा

## ऋचा चड्ढा ने मीटू मामले में अपना नाम लिए जाने पर कानूनी कार्रवाई शुरू की

फिल्म अभिनेत्री ऋचा चड्ढा ने कहा कि फिल्मकार अनुराग कश्यप पर आरोपों से संबंधित मामले में अभिनेत्री पायल घोष द्वारा उनका नाम लिए जाने पर वह कानूनी कार्रवाई शुरू कर रही हैं। घोष ने कश्यप पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था और निर्देशक ने इस आरोप को निराधार बताया था। उन्होंने यह दावा भी किया था कि कश्यप के ऋचा चड्ढा सहित अन्य महिला कलाकारों के साथ अंतरंग संबंध रहे हैं।

चड्ढा ने इस मामले में ट्विटर पर अपनी वकील सवीना बेदी सच्चर के बयान को साझा किया। बयान में वकील ने कहा है, 'मेरे मुवक्किल ने उचित कानूनी कार्रवाई शुरू की है और वह अपने कानूनी अधिकारों का उपयोग करेंगी।' गौरतलब है कि घोष ने अपना ट्वीट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को टैग करते हुए कश्यप के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। घोष ने ट्वीट में कहा था, 'अनुराग कश्यप ने मेरे साथ बुरी तरह जबर्दस्ती की। प्रधानमंत्री कार्यालय और नरेन्द्र मोदी जी कार्रवाई कीजिए तथा देश इस रचनात्मक व्यक्ति में छिपे शैतान को देखे। मुझे पता है कि यह मुझे नुकसान पहुंचा सकता है और मेरी सुरक्षा को खतरा है। कृपया मदद कीजिए।'



घोष के इन आरोपों को फिल्मकार अनुराग कश्यप ने खारिज करते हुए इन्हें 'निराधार' करार दिया। इस बीच, कश्यप की पूर्व पत्नियों-फिल्म संपादक आरती बजाज और अदाकारा कल्कि ने फिल्मकार का समर्थन किया है। इसके अलावा अभिनेत्री तापसी पन्नू, हंसल मेहता, मोहम्मद जोशान अयूब सहित अन्य लोग भी कश्यप के समर्थन में सामने आए हैं।

## पाकिस्तान की अदाकारा सबा कमर का सोशल मीडिया पर उड़ रहा है मजाक

पाकिस्तान में लोकडाउन के दौरान ट्विटर पर ट्रोलिंग से बाज नहीं आ रहे हैं लोग इस्लामाबाद के सोशल मीडिया अधिकार समूह 'बायट्सफॉरऑल' के शाहजाद अहमद ने 'एपी' से कहा कि 'यह अभूतपूर्व है।' इससे पहले ईरान से कथित तौर पर कोरोना वायरस को पाकिस्तान लाने के लिए हजारा जाति को जिम्मेदार ठहराते हुए ट्विटर पर अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया गया था।



**इस्लामाबाद**-पाकिस्तानी अदाकारा सबा कमर के एक गीत में पाकिस्तान के पूर्वी शहर लाहौर में 17वीं सदी की एक मस्जिद में 'वेडिंग गाउन' पहने नजर आने पर विवाद इतना बढ़ गया कि सोशल मीडिया पर उन्हें जमकर ट्रोल किया गया। अल्पसंख्यक अधिकार कार्यकर्ताओं और सोशल मीडिया निगरानी समूहों का कहना है कि ऑनलाइन सांप्रदायिक हमलों, अभद्र और ईशनिंदा के मामलों में वृद्धि हुई है। यह मामला इस सूची में नया है। सोशल मीडिया पर दावा किया गया कि वीडियो में सबा कमर ऐतिहासिक वजीर खान की मस्जिद में नाचती नजर आ रही है।

कोरोना वायरस से निपटने के लिए लगे लोकडाउन के कारण लाखों लोग घरों में कैद हो गए हैं और इंटरनेट के इस्तेमाल में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस्लामाबाद के सोशल मीडिया अधिकार समूह 'बायट्सफॉरऑल' के शाहजाद अहमद ने 'एपी' से कहा कि 'यह अभूतपूर्व है।' इससे पहले ईरान से कथित तौर पर कोरोना वायरस को पाकिस्तान लाने के लिए हजारा जाति को जिम्मेदार ठहराते हुए ट्विटर पर अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया गया था। लोकडाउन के दौरान एक और घटना सोशल मीडिया पर चर्चा में रही थी, जिसमें चरमपंथियों ने इस्लामाबाद में एक हिंदू मंदिर के निर्माण स्थल पर हमला किया था और मुसलमानों को ऑनलाइन चेतावनी दी थी कि मंदिर का समर्थन करना 'ईशनिंदा' समझा जाएगा।

कु शोभा

स्वास्थ्य

## आपकी इम्युनिटी को बढ़ाएं यह होममेड ड्रिंक्स

बदलते मौसम में शरीर आसानी से किसी भी तरह के जलू की चपेट में आ जाता है। खासतौर से कमजोर इम्युनिटी वाले लोग आसानी से किसी भी वायरस का शिकार हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें हल्दी वाला दूध पीने की काफी ज़रूरत है।



कोरोना के चलते लोग इम्युनिटी को लेकर ज्यादा फिक्रमंद हो गए हैं। लोग मार्केट व घरेलू उपचार दोनों ही अपने बॉडी के हिसाब से ढूंढ रहे हैं। यह बात तो सही है कि इम्युनिटी हमारे शरीर के लिए बेहद ज़रूरी है। यह हमें कई तरह की बीमारियों से बचाने के साथ-साथ हमारे शरीर में ताकत भी देती है। और इस महामारी के समय में तो यह अत्यंत ज़रूरी हो गया है। इस कोरोना के समय में वायरस से लड़ने के लिए डॉक्टर्स भी इम्युनिटी को बढ़ाने की सलाह दे रहे हैं। और हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक वायरस की चपेट में आने वाले ज्यादातर लोग वही हैं जिनका इम्युनिटी सिस्टम कमजोर है। ऐसे में इम्युनिटी पॉवर क्षमता

बढ़ाने के लिए हमें इम्युनिटी बूस्टर ड्रिंक्स पीने की ज़रूरत है। वैसे तो शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने के लिए सब्जियों और फलों के सेवन का विशेष ध्यान रखने की ज़रूरत है। लेकिन इसके अलावा भी कई तरह के जूस भी हैं जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का काम करते हैं। इन इम्युनिटी बूस्टर जूस पर कई सारे वैज्ञानिक शोध भी हुए हैं जिनसे पता चला है कि इनसे इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।

आइए जानते हैं इन इम्युनिटी बूस्टर ड्रिंक्स के बारे में जो आप घर में आसानी से बना सकते हैं-

### हल्दी वाला दूध-

बदलते मौसम में शरीर आसानी से किसी भी तरह के फ्लू की चपेट में आ जाता है। खासतौर से कमजोर इम्युनिटी वाले लोग आसानी से किसी भी वायरस का शिकार हो जाते हैं। ऐसे में उन्हें हल्दी वाला दूध पीने की काफी ज़रूरत है। एंटीसेप्टिक और एंटीबैक्टेरियल गुणों से भरपूर हल्दी में दूध मिलाकर पीने से हमारे अंदर के बैक्टेरिया नष्ट होते हैं। साथ ही शरीर व अंदरूनी दर्द भी कम होता है और रात को नींद भी अच्छी आती है।

इसे बनाने के लिए आप एक कप दूध में आधा चम्मच हल्दी मिलाएं और इसे गर्म चुस्की लेकर पिएं। यदि आप इस दूध का सेवन रात में करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।

### चुकंदर, गाजर व सेब जूस-

ये तीनों ही चीजों में कई पोषण होता है। सेब विटामिन, ज़िंक और गाजर विटामिन-ए और ई से युक्त होता है। साथ ही चुकंदर में कई महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो शरीर के लिए ज़रूरी व फायदेमंद होते हैं। यह पेट के लिए भी हल्के होते हैं। इस डिटॉक्स ड्रिंक को बनाने के लिए आपको एक छोटे साइज़

का चुकंदर, एक छोटा सेब व छोटी गाजर और एक लीटर पानी चाहिए। इन सभी को छोटा-छोटा काट लें और इसमें पानी मिलाकर ब्लेंडर में इसे पीस लें। अब इसे छान लें और पी जाएं। इस ड्रिंक का सबसे अच्छा असर सुबह खाली पेट पीने से होगा।

### आयुर्वेदिक काढ़ा-

आयुर्वेदिक काढ़ा अधिकतर घर में बनाया जाता है। लोग इसको अपने-अपने तरीके से बना कर सेवन करते हैं। यह सेहत के साथ-साथ इम्युनिटी के लिए काफी अच्छा है। इसे बनाने के लिए आपको दो कप पानी को एक पैन में उबालना है। और इसमें काली मिर्च का पाउडर, कूटी हुई अदरक या सोंठ, लौंग, अजवाइन, दालचीनी, और अन्य मसालों डाल दें। साथ ही आप इसमें तुलसी की कुछ पत्तियां भी डाल सकते हैं। अब इस पानी को 5 मिनट के लिए अच्छे से उबलने दें। इसे पानी को तब तक उबालना है जब तक पैन का पानी आधा न हो जाए। अब इसे एक कप में छान लें। यदि आप चाहें तो इसमें स्वादानुसार गुड़ या शहद भी मिलाकर गर्मा-गर्म पी सकते हैं।

दोनों ही इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने के लिए रामबाण ड्राई फ्रूट हैं। इनका भिगाकर सेवन करने पर यह काफी फायदेमंद होता है। रात को इसे दूध के साथ लेने से सेहत के साथ-साथ नींद भी अच्छी आती है। इसे बनाना काफी आसान है। इसे बनाने के लिए आप भीगे हुए 3-4 बादाम व छुआरे लें। अब इसे ब्लेंडर में थोड़े दूध के साथ अच्छे से पीस लें। फिर बाकी का दूध डाल कर अच्छे से ब्लेंड कर लें। अब इसे गिलास में डालकर नाश्ते व रात में सोने से पहले पीएं।



# बाबरी विध्वंस मामले में सभी आरोपी बरी, सीबीआई कोर्ट ने कहा- पूर्व नियोजित नहीं थी घटना

लखनऊ-सीबीआई की विशेष अदालत ने छह दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के मामले में बुधवार को बहुप्रतीक्षित फैसला सुनाते हुए सभी आरोपियों को बरी कर दिया। विशेष अदालत के न्यायाधीश एस के यादव ने अपने फैसले में कहा कि बाबरी मस्जिद ढहाए जाने की घटना पूर्व नियोजित नहीं थी, यह एक आकस्मिक घटना थी। उन्होंने कहा कि आरोपियों के खिलाफ कोई पुख्ता सुबूत नहीं मिले, बल्कि आरोपियों ने उन्मादी भीड़ को रोकने की कोशिश की थी। अदालत द्वारा फैसला सुनाये जाने के बाद किसी अभियुक्त ने जय श्री राम का नारा लगाया। न्यायालय ने कहा कि सीबीआई ने इस मामले की वीडियो फुटेज की कैसेट पेश की, उनके दृश्य स्पष्ट नहीं थे और न ही उन कैसेट्स को सील किया गया। घटना की तस्वीरों के नेगेटिव भी अदालत में पेश नहीं किये गये।

अदालत ने कहा कि छह दिसम्बर 1992 को दोपहर 12 बजे तक सब ठीक था। मगर उसके बाद “विवादित ढांचा” के पीछे से पथराव शुरू हुआ।



विश्व हिन्दू परिषद नेता अशोक सिंघल “विवादित ढांचे” को सुरक्षित रखना चाहते थे क्योंकि ढांचे में रामलला की मूर्तियां रखी थीं। उन्होंने उन्हें रोकने की कोशिश की थी और कारसेवकों के दोनों हाथ व्यस्त रखने के लिए जल और फूल लाने को कहा था। विशेष सीबीआई अदालत के न्यायाधीश यादव ने 16 सितंबर को इस मामले के सभी 32 आरोपियों को फैसले के दिन अदालत में मौजूद रहने को कहा था।

वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पूर्व उप प्रधानमंत्री आडवाणी, पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरली मनोहर जोशी और उमा भारती, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह, राम जन्मभूमि न्यास अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास और सतीश प्रधान अलग-अलग कारणों से न्यायालय में हाजिर नहीं हो सके। कल्याण सिंह बाबरी मस्जिद ढहाये जाने के वक्त उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। राम मंदिर निर्माण ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय भी इस मामले

के आरोपियों में शामिल थे। मामले के कुल 49 अभियुक्त थे, जिनमें से 17 की मृत्यु हो चुकी है। फैसला सुनाये जाने से ऐन पहले सभी अभियुक्तों के वकीलों ने अपराध प्रक्रिया संहिता की धारा 437-ए के तहत जमानत के कागजात पेश किये। यह एक प्रक्रियात्मक कार्रवाई थी और इसका दोषसिद्धि या दोषमुक्त होने से कोई लेना-देना नहीं।

उच्चतम न्यायालय ने सीबीआई अदालत को बाबरी विध्वंस मामले का निपटारा 31 अगस्त तक करने के निर्देश दिए थे लेकिन गत 22 अगस्त को यह अवधि एक महीने के लिए और बढ़ा कर 30 सितंबर कर दी गई थी। सीबीआई की विशेष अदालत ने इस मामले की रोजाना सुनवाई की थी। केंद्रीय एजेंसी सीबीआई ने इस मामले में 351 गवाह और करीब 600 दस्तावेजी सुबूत अदालत में पेश किए। इस मामले में अदालत में पेश हुए सभी अभियुक्तों ने अपने ऊपर लगे तमाम आरोपों को गलत और बेबुनियाद बताते हुए केंद्र की तत्कालीन कांग्रेस सरकार पर दुर्भावना से मुकदमे दर्ज कराने का आरोप लगाया था।

## बाबरी मामले में लालकृष्ण आडवाणी ने अदालत के फैसले का किया स्वागत, लगाया जय श्री राम का नारा

नई दिल्ली-बाबरी विध्वंस मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की विशेष अदालत द्वारा बरी किए जाने के बाद भाजपा के वयोवृद्ध नेता व देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने “जय श्री राम” का नारा लगाया और अदालत के फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि यह निर्णय उन्हीं अन्य फैसलों के अनुरूप हैं जिसने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के उनके सपने का मार्ग प्रशस्त किया। आडवाणी इस मामले के 32 आरोपियों में एक और रामजन्मभूमि आंदोलन के अगुवा थे। आडवाणी ने एक वीडियो संदेश में कहा, “विशेष अदालत का आज का जो निर्णय हुआ है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है और वह हम सबके लिए खुशी का प्रसंग है। जब हमने अदालत का निर्णय सुना तो हमने जय श्री राम का नारा लगाकर इसका स्वागत किया।”

बाद में एक बयान जारी कर उन्होंने कहा, “यह निर्णय उन्हीं अन्य फैसलों के पदचिह्नों पर है जिसने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के उनके सपने का मार्ग प्रशस्त किया।” अदालत के फैसले के बाद 92 वर्षीय आडवाणी अपने कमरे से बाहर निकले और ‘जय श्री राम’ का नारा लगाते हुए मोड़िया का अभिवादन किया। अदालत जब अपना फैसला सुना रही थी उस वक्त आडवाणी अपने परिवार के सदस्यों के साथ टेलीविजन देख रहे थे। उनकी पुत्री प्रतिभा आडवाणी उनकी हाथ पकड़ें थीं।

गौरतलब है कि सीबीआई की विशेष अदालत ने छह दिसम्बर 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के मामले में बुधवार को अपना फैसला सुनाते हुए सभी आरोपियों को बरी कर दिया। विशेष न्यायाधीश एस. के. यादव ने फैसला सुनाते हुए कहा कि बाबरी मस्जिद विध्वंस की घटना पूर्व नियोजित नहीं थी, यह एक आकस्मिक घटना थी। उन्होंने कहा कि आरोपियों के खिलाफ कोई पुख्ता सुबूत नहीं मिले, बल्कि आरोपियों ने उन्मादी भीड़ को रोकने की कोशिश की थी।

## एमएसपी भी रहेगी व फसल बेचने की आजादी भी-मोदी



कृषि बिलों को लेकर बोला विपक्ष पर जोरदार हमला. जिन सामानों व उपकरणों की किसान करते हैं पूजा उन्हें आग लगाकर यह लोग किसानों को अपमानित कर रहे हैं. यह आजादी कुछ लोग बर्दाश्त नहीं कर पा रहे क्योंकि इनकी काली कमाई का एक और जरिया समाप्त हो गया

देहरादून-विपक्ष पर किसानों को अपमानित करने का आरोप लगाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि देश में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और किसानों को अपनी उपज कहीं भी बेचने की आजादी,

दोनों रहेगी।

महत्वाकांक्षी परियोजना नमामि गंगे के तहत उत्तराखंड में हरिद्वार, त्रिभुवन, मुनि की रेती और बद्रीनाथ में सीवरेज शोधन संयंत्र (एसटीपी) और गंगा संग्रहालय का नई दिल्ली

## भारत में कोहराम मचा सकता है दूसरा चीनी वायरस-आईसीएमआर

नई दिल्ली-एक तरफ भारत समेत पूरी दुनिया कोरोना वायरस के प्रकोप से पीछा छुड़ाने की जद्दोजहद में जुटी है तो दूसरी तरफ चीन के एक और वायरस का खतरा देश-दुनिया पर मंडराने लगा है। भारतीय आर्युविज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने भारत सरकार को चेतावनी दी है कि चीन का वैट क्यू वायरस (यानी सीक्यूवी) भारत में दस्तक दे सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह इंसानों में ज्वर की बीमारी, मेनिंजाइटिस और बच्चों में इन्सेफलाइटिस की समस्या पैदा करेगा।

वैट क्यू वायरस की मौजूदगी का मिला प्रमाण = आईसीएमआर के पुणे स्थित नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ वायरॉलजी के सात शोधकर्ताओं के हवाले से कहा गया है कि चीन और वियतनाम में वैट क्यू वायरस की मौजूदगी का पता चला है। वहां क्यूलेक्स मच्छरों और सूअरों में यह वायरस मिला है। एक्सपर्ट्स ने चेतावनी दी है कि भारत में भी

क्यूलेक्स मच्छरों में वैट क्यू वायरस जैसा ही कुछ मिला है। संस्था ने कहा कि सीक्यूवी मूलतः सूअर में ही पाया जाता है और चीन के पालतू सूअरों में इस वायरस के खिलाफ पनपी एंटीबॉडीज पाया गया है। इसका मतलब है कि वैट क्यू वायरस ने चीन में स्थानीय स्तर पर अपना प्रकोप पैलाना शुरू कर दिया है।

883 सैंपल में दो पाए गए पॉजिटिव - वैज्ञानिकों ने विभिन्न राज्यों में 883 लोगों से सैंपल लिए और दो में वायरस के खिलाफ एंटीबॉडीज पाए गए। जांच में पता चला कि दोनों लोग एक ही वक्त वायरस से सांमित हुए थे। इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च में जून महीने में प्रकाशित एक रिसर्च में कहा गया है, ‘इंसानों के सीरम सैंपलों की जांच में एंटी-सीक्यूवी आईजीजी एंटीबॉडी का पाया जाना और मच्छरों में सीक्यूवी का रैप्लिकेशन कपैबिलिटी से पता चलता है कि भारत में यह बीमारी पैलाने की क्षमता रखता है।

से डिजिटल माध्यम से लोकार्पण के बाद अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने कृषि विधेयकों को लेकर विपक्ष पर करारा हमला बोला और कहा, जिन सामानों और उपकरणों की किसान पूजा करते हैं, उन्हें आग लगाकर ये लोग किसानों को अपमानित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बरसों तक ये लोग एमएसपी लागू करने की बात कहते रहे, लेकिन किया नहीं और जब उनकी सरकार ने ऐसा किया तो वे उस पर ही किसानों में भ्रम फैला रहे हैं।

विपक्षी दलों का नाम लिए बिना प्रधानमंत्री ने कहा, एमएसपी लागू करने का काम स्वामीनाथन आयोग की इच्छा के अनुसार हमारी सरकार ने किया। वे एमएसपी पर ही किसानों में भ्रम फैला रहे हैं। देश में एमएसपी भी रहेगी और किसानों को अपनी उपज कहीं भी बेचने की आजादी भी रहेगी।

उन्होंने कहा कि यह आजादी कुछ लोग बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि इनकी काली कमाई का एक और जरिया समाप्त हो गया है और इसलिए इन्हें परेशानी है। कृषि विधेयक पर केवल विरोध के लिए विरोध करने का नमामि गंगे मिशन के तहत उत्तराखंड में छह परियोजनाओं का उद्घाटन करने के बाद विपक्ष पर आरोप लगाते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इन विधेयकों के माध्यम से देश के किसानों को अनेक बंधनों से मुक्त किया गया है और अब देश का किसान कहीं पर भी किसी को भी अपनी उपज बेच सकता है। मोदी ने कहा, आज जब केंद्र सरकार किसानों को उनके अधिकार दे रही है तो भी वे विरोध पर उतर आए हैं। ये लोग चाहते हैं कि देश का किसान खुले बाजार में अपनी उपज नहीं बेच सके। ये चाहते हैं कि किसानों की गाड़ियां जब्त होती रहें, उनसे वसूली होती रहे, उनसे कम कीमत पर अनाज खरीदकर बिचोलिए मुनाफा कमाते रहें। जीएसटी पर विपक्ष के विरोध पर मोदी ने कहा जीएसटी लागू होने के बाद देश में घरेलू सामान पर लगने वाला कर बहुत कम हो गया है और ज्यादातर घरेलू सामान जैसे रसोई की चीजों पर या तो कर ही नहीं है या पांच प्रतिशत से भी कम है।

## बाबरी विध्वंस मामले में आडवाणी समेत सभी 32 आरोपियों बरी

लखनऊ-अयोध्या में बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के मामले में सीबीआई कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया। इस दौरान कोर्ट ने सभी 32 आरोपियों को बरी कर दिया है। सीबीआई कोर्ट ने फैसला सुनाते हुए लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, कल्याण सिंह, उमा भारती, विनय कटियार समेत 32 आरोपियों को बरी कर दिया है। न्यायाधीश एस के यादव ने फैसला सुनाते हुए कहा कि विश्व हिन्दू परिषद नेता अशोक सिंघल के खिलाफ कोई साक्ष्य नहीं है। कोर्ट ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ कोई पुख्ता सुबूत नहीं मिले, बल्कि आरोपियों ने उन्मादी भीड़ को रोकने की कोशिश की थी। सीबीआई अदालत के न्यायाधीश एस के यादव ने 16 सितंबर को इस मामले के सभी 32 आरोपियों को फैसले के दिन अदालत में मौजूद रहने को कहा था।

## 2 जी घोटाला-सीबीआई, ईडी की याचिकाओं को मंजूर किया

नई दिल्ली-दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाला मामले में पूर्व दूरसंचार मंत्री ए राजा और अन्य को बरी किये जाने के खिलाफ अपीलों पर जल्द सुनवाई के संबंध में सीबीआई, ईडी की याचिका को मंजूर की।

न्यायमूर्ति बृजेश सेठी ने आदेश सुनाते हुए कहा कि पांच अक्टूबर से दैनिक आधार पर 2 जी मामले में अपीलों पर सुनवाई की जाएगी। अदालत ने कहा कि सबसे पहले सीबीआई के मामले में लीव टू अपील पर दलीलें सुनी जायेगी जिसमें राजा और अन्य को बरी किया गया था। जांच एजेंसियों ने 12 अक्टूबर के लिए सूचीबद्ध उनकी लीव टू अपील (अपील की अनुमति) याचिका पर जल्द सुनवाई करने का आग्रह किया था। लीव टू अपील उच्च न्यायालय में एक फैसले को चुनौती देने के लिए एक अदालत द्वारा किसी पक्ष को दी गई औपचारिक अनुमति होती है। एजेंसियों ने कहा कि मामले में दलीलों को सुनने में उच्च न्यायालय का पर्याप्त न्यायिक समय लिया गया और 30 नवंबर को न्यायाधीश की सेवानिवृत्ति से पहले यह पूरी हो जानी चाहिए। सीबीआई और ईडी की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एसजी) संजय जैन ने कहा था

कि इस मामले में पहले ही न्यायिक समय लग चुका है और यह समय व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। एक विशेष अदालत ने घोटाले से संबंधित केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) मामलों में राजा, द्रमुक सांसद कनिमोझी और अन्य को 21 दिसम्बर, 2017 को बरी कर दिया था। विशेष अदालत ने 2जी घोटाला मामले की जांच में सामने आये एक अलग मामले में एस्सार समूह के प्रवर्तकों रविकांत रड्या और अंशुमान रड्या, लूप टेलीकॉम के प्रवर्तकों आई पी खेतान तथा किरण खेतान और चार अन्य को भी बरी कर दिया था। सीबीआई ने रविकांत रड्या, अंशुमान रड्या, आई पी खेतान और किरण खेतान और चार अन्य को बरी किये जाने को चुनौती देने वाली अपील पर भी जल्द सुनवाई का अनुरोध किया था। राजा और कनिमोई के अलावा विशेष अदालत ने सीबीआई द्वारा दायर 2जी मामले में पूर्व दूरसंचार सचिव सिद्धार्थ बेहुरा, राजा के पूर्व निजी सचिव आर के चंदोलिया अ यूनितेक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक संजय चंद्रा और रिलायंस अनिल धीरूभाई अंबानी समूह (आरएडीएजी) के तीन शीर्ष अधिकारियों - गौतम दोषी, सुरेंद्र पिपरा और हरि नायर को भी बरी कर दिया था।